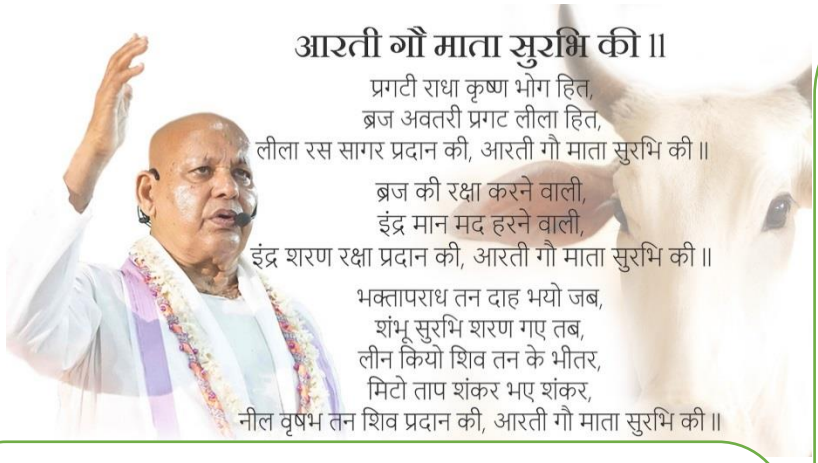

अनुक्रमणिका

विषय-सूची — पृष्ठ-संख्या

०१. 'शील-स्वभाव' का स्वरूप 'भक्त-प्रेम'.....०३
०२. श्रीकृष्ण-गुणगान से 'भव-दावाग्नि' शांत.....०५
०३. निर्विकार मन का मूल 'नामाराधन-निष्ठा'.....०७
०४. कृष्ण-प्रेम का प्रवेश द्वार 'काम-त्याग'.....०९
०५. अहैतुकी कृपाकारिणी 'श्रीराधिका'.....११
०६. भक्ति की किरण 'कृतज्ञता'..... ....१३
०७. सच्ची सेवाराधिका सिलपिल्लेबाई.....१५
०८. भू-देवी की आधारिका 'गौमाता'.....१९
०९. गीता-ज्ञान से आत्मबोध.....२१
१०. परमदर्शनीय ' सच्चिदानन्द-रूप'.....२३
११. गौ-ग्रास योजना (महत्वपूर्ण बिन्दु).....२७

॥ राधे किशोरी दया करो ॥

हमसे दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो |
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो |
विषम विषयविष ज्वालमाल में, विविध ताप तापनि जु जरो |
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो |
दास तुम्हारो आस और की, हरो विमुख गति को झगरो |
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्‌यो |

संरक्षक- **श्रीराधामानबिहारीलाल**
प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर सेवा संस्थान,
गह्वरवन बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)
(Website :www.maanmandir.org)
(E-mail :ms@maanmandir.org)
mob. : 9927338666, 9837679558

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८:०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं |

परम पूज्य श्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान -

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले |"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकाले व मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवा द्रव्य किसी विश्वसनीय गौशाला को दान कर गौ-रक्षा कार्य में सहभागी बन अनंत पुण्य का लाभ लें | हिन्दू शास्त्रों में अंश मात्र गौ सेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ॥

(श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता |

प्रकाशकीय

नैष्कर्म्य सिद्धि के बिना जीव की परमार्थ में तो गति हो नहीं सकती | बहुधा प्राणी विविध वासनाओं की अविरल धारा में प्रवाहित होते रहते हैं और उनकी वही स्थिति हो जाती है, जैसे किसी जलपोत पर बैठा पक्षी समुद्र की दूरियों को मापना चाहता है तो वह अंतहीन सीमाओं के आश्रय की निरर्थक खोज करता हुआ अपना दुःखद अन्त ही कर बैठता है | संसार की कोई वासना किसी भी प्राणी को कदापि संतुष्ट नहीं कर सकती क्योंकि जैसे मृगतृष्णा में जल की प्राप्ति तो होती नहीं, मृग का अन्त अवश्य हो जाता है | हमारा प्रत्येक कर्म अपनी अहंता-ममता की आपूर्ति के लिए होता है फिर भी कभी अहंता-ममता का अन्त नहीं होता | एक वासना दूसरी वासना को जन्म देती है | यही कारण है कि लोभी, संग्रही व्यक्तियों को कभी सुख सुलभ नहीं होता बल्कि उनका धन जीते-जी तो उन्हें ताप-संताप देता ही है, मरणोपरांत भी वह जलाता रहता है –

नेह यत्कर्म धर्माय न विरागाय कल्पते।
न तीर्थपदसेवायै जीवन्नपि मृतो हि सः ॥ (श्रीमद्भागवतजी ३/२३/५६)

सिद्ध भक्तों या संतों की सतत् सन्निधि अवश्य इन वासनाओं से छुड़ा सकती है | वासनाओं को जो छुड़ा दें वही हैं सिद्धपुरुष | इष्ट की स्फूर्ति हो जाये; यही सबसे बड़ी सिद्धि है | इसी से नैष्कर्म्य आयेगा | नैष्कर्म्य आने के पश्चात् फिर कर्मबन्धनों से हम मुक्त हो जाते हैं –

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां सन्न्यासेनाधिगच्छति ॥ (श्रीमद्भगवतगीता १८/४९)

शरीर में आसक्ति है, इन्द्रियों में आसक्ति है तो फिर संतुष्टि कहाँ ? एक सन्तुष्ट महापुरुष का जीवन ऐसा होता है कि उसके आस-पास क्या योजनपर्यन्त भी जहाँ माया का प्रवेश नहीं हो पाता | यथा- काकभुशुण्डिजी के आश्रम के एक योजन दूरी तक माया दिखायी नहीं देती थी | ऐसे ही वीतरागी सन्त पूज्य श्रीरमेश बाबाजी, जिन्होंने अपने जीवन में कभी एक पैसे का भी संग्रह नहीं किया; भला फिर उनके पास रहने वाले छोटे-छोटे बच्चों में ऐसी निःस्पृहता क्यों नहीं आयेगी | यही कारण है कि भगवन्नाम-प्रचार हो या गोसेवा अथवा प्राणीमात्र की सेवा, जो सतत् मानमन्दिर सेवा संस्थान से अहर्निश चलती-रहती है | गौवंश के प्रति उपेक्षा को मिटाने का पूज्य श्रीबाबा महाराज द्वारा प्रशस्त एक सरलतम उपाय- "१/- रू. प्रतिदिन हर भारतवासी देश की किसी भी विश्वसनीय गौशाला में गोहितार्थ व्यय करे |" इस भावना की अभिव्यक्ति दिखाती है कि संत-महापुरुष कितने हितैषी हैं गौमाता व आमजन के | उन्होंने गौमाता के लिए बड़ा ही कल्याणकारी मार्ग प्रस्तुत किया है | आशा है उनकी निःस्पृहता और परमार्थसिद्धि सभी के लिए प्रेरणास्पद होगी .....

राधाकांत शास्त्री
व्यवस्थापक, मानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

मई २०१९ मानमन्दिर, बरसाना

'शील-स्वभाव' का स्वरूप 'भक्त-प्रेम'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'भक्ति के मूलभूत सिद्धान्त' (१०/७/२०१३) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी हेमाजी, मानमन्दिर, बरसाना

सखी भाव, सहचरी भाव तो बहुत आगे की बातें हैं, यदि 'भक्ति के मूलभूत भाव' ही ठीक रहें तो आगे तक नुकसान की सम्भावना नहीं है, जैसे - जय-विजय को श्राप मिला, तो क्यों मिला ? क्योंकि उन्होंने सनकादिक मुनियों को छड़ी लगाकर रोक दिया था |

"वेत्रेण चास्खलयतामतदर्हणांस्तौ
तेजो विहस्य भगवत्प्रतिकूलशीलौ |"

(श्रीमद्भागवतजी ३/१५/३०)

'वेत्र - बेंत (लठिया), 'चास्खलयताम्' - उनको रोका, 'अतदर्हणांस्तौ'- वे इसके योग्य नहीं थे | "तेजो विहस्य भगवत्प्रतिकूलशीलौ" ये बातें भगवान् के शील के विरुद्ध हैं | भगवान् का शील क्या है ? भगवान् तो कहते हैं –

नाहमात्मानमाशासे मद्भक्तैःसाधुभिर्विना |
श्रियं चात्यन्तिकीं ब्रह्मन् येषां गतिरहं परा ॥

(श्रीमद्भागवतजी ९/४/६४)

मैं भक्तों के बिना अपनी सत्ता भी नहीं चाहता, स्वयं भी नहीं जीना चाहता हूँ, लक्ष्मी को भी मैं नहीं चाहता हूँ | भक्तों के बिना स्वयं (अपने) को भी मैं नहीं चाहता | यहाँ तक कि भगवान् ने सनकादिकों से कहा है कि यदि मेरी भुजायें भी भक्तों का अपराध करें तो मैं उनको भी काट डालूँगा क्योंकि संसार में मेरा जो कुछ भी यश है, वह आप जैसे संतों ने ही तो फैलाया है | मेरी कीर्ति; तीर्थ है, तारने वाली है, वह मुझे आप लोगों से मिली है –

"सोऽहं भवद्भ्य उपलब्धसुतीर्थकीर्तिश्छिन्द्यां
स्वबाहुमपि वः प्रतिकूलवृत्तिम् |"

(श्रीमद्भागवतजी ३/१६/६)

यहाँ एक शंका होती है कि क्या भगवान् भी अपने एजेंटों (सेवकों) से 'स्वार्थमय-प्रेम' करते हैं, क्या वे (भगवान्) भी अपना यश फैलाने के इच्छुक हैं? नहीं, भगवान् की दया उनको विवश करती है कि जो उनका यश फैलाता है, वह (भगवद्-यश) संसार में फँसे हुए जीवों के लिए तीर्थ है, जो उन्हें भवसागर से तार देगा | इसलिए भगवान् दया के आधीन होकर, जो भक्त उनका यश फैलाते हैं, उनको इतने प्यारे हो जाते हैं | इससे पता पड़ता है कि निष्काम भाव से कथा-कीर्तन कहने-सुनने वाले भगवान् को अत्यन्त प्रिय होते हैं | हम जैसे लोभी लोग कथा के बदले चाहते हैं कि कुछ पैसा मिल जाये, भेंट मिल जाये, ये सब निकृष्ट बातें हैं; इनसे भगवान् की कृपा नहीं मिलती है | जो भक्त निष्काम (निष्किंचन) भाव से भगवान् की तीर्थमय-कीर्ति (परम पवित्रकारी यश) फैलाता है, वह परहितकारी भक्त भगवान् को इतना प्यारा हो जाता है कि भगवान् कहते हैं कि हमारी चार भुजायें भी अगर ऐसे भक्त का अपराध करें तो मैं उनको भी काट डालूँगा | श्रीभगवान् सनकादिक मुनियों से कहते हैं – **"भवद्भ्य उपलब्धसुतीर्थकीर्तिः"** आप जैसे संतों से ही हमारा यश 'परममंगलकारी सुतीर्थ' हो गया है | कैसे संत? जो भगवान् की रसमयी भक्ति को (निरन्तर भगवद्कथा-कीर्तन का प्रचार-प्रसार करके) संसार में फैलाते हैं, उनमें किसी संप्रदाय से सम्बन्धित संकीर्ण भावनाएँ (हम सन्यासी हैं, उदासी हैं आदि ये सब भेदबुद्धि) नहीं होती | ब्रजगोपियों ने भी कहा है –

"भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः |" (श्रीमद्भागवतजी१०/३१/९) जो भगवान् के कथामृत का निःशुल्क दान करता है, वह संसार में सबसे बड़ा दाता है; ऐसे संतों की सेवा से भगवान् उसके दास बन जाते हैं –

यत्सेवयाचरणपद्मपवित्ररेणुं
सद्यःक्षताखिलमलंप्रतिलब्धशीलम् ।
न श्रीर्विरक्तमपि मां विजहाति यस्याः
प्रेक्षालवार्थ इतरे नियमान् वहन्ति ॥

(श्रीमद्भागवतजी ३/१६/७)

भगवान् कहते हैं कि ऐसे संतों की सेवा से ही मेरी चरण-रज में पवित्रता की शक्ति आयी है और वह उसी समय जीव के अनन्त पाप जला देती है, उन्हीं संतों की सेवा से मुझको शीलगुण मिला है | मैं विरक्त हूँ, लक्ष्मी को नहीं चाहता हूँ फिर भी वह मुझको नहीं छोड़ती है, जिसकी कृपा के लिए लोग नियम, तपस्या आदि करते हैं | यह भगवान् का शील है कि वे अपने भक्त के बिना स्वयं जीना नहीं चाहते, यहाँ तक कि अपने भक्त के बिना लक्ष्मीजी को भी नहीं चाहते हैं | जय-विजय ने भगवान् के शील के विरुद्ध कार्य किया –

"तेजो विहस्य भगवत्प्रतिकूलशीलौ"

उन्होंने बेंत लगाकर चारों कुमारों को रोक दिया था | वे दोनों (जय-विजय) कैसे थे? वे भगवान् के शील के प्रतिकूल थे अर्थात् उनमें दैन्य नहीं था, जो भक्ति का मूलभूत भाव है, जिसे चैतन्य महाप्रभुजी ने कहा है –

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना |
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ॥

(शिक्षाष्टकम्-३)

तिनके से भी ज्यादा अपने को तुच्छ मानना, वृक्ष से भी अधिक सहनशीलता, अहंशून्य भाव से (अमानी होकर) दूसरे को सम्मान देना, इस प्रकार के दैन्ययुक्त गुणों वाला भक्त सतत् श्रीभगवान् का संकीर्तन करता है जिससे वह सदा-सर्वदा भगवान् का भी स्मरणीय बन जाता है | जब ऐसा दैन्यमय भाव छूट जाता है तब आगे चाहे तुम रास में पहुँच जाओ, वहाँ भी भगवान् तुमको छोड़ देंगे, चाहे कितनी भी ऊँची स्थिति पर पहुँच जाओ, यदि किसी भी प्रकार का सूक्ष्मातिसूक्ष्म मिथ्या अहं भाव उत्पन्न हुआ तो यही असत् भाव विशुद्ध भक्ति में सबसे बड़ा बाधक (शत्रु) बन जाता है |

नारदजी ने भक्ति सूत्र में कहा है –

"ईश्वरस्याप्यभिमानिद्वेषित्वादैन्यप्रियत्वाच्च" भगवान् को अभिमान से द्वेष है, जरा भी जिसके अन्दर मान (अहंकार) है, भगवान् का द्वेष वहाँ अवश्य उसके सामने आ जायेगा और अगर दैन्य भाव है तो भगवान् प्रेम करेंगे | इसीलिए चैतन्य महाप्रभु के सभी परिकरों में बड़ा प्रेम था, यहाँ तक कि एक निम्न वर्ण के कालिदास नामक भक्त थे और भक्तों का जूठन खाने की महाप्रभुजी को आदत थी; वह भक्त अपनी जूठन महाप्रभु को दे नहीं सकते थे, इसलिए महाप्रभु उनके घर में आम ले गये और उनको भेंट किया, फिर वहाँ से चले गये | भक्त कालिदास ने सोचा कि महाप्रभुजी तो अब चले गये, अब हम आम खा लेंगे | आम खाकर वह रात में अपने घर के बाहर छिलका-गुठली फेंकते थे और उस समय महाप्रभुजी उसका आस्वादन करते थे; ये लीलाएँ भक्त-प्रेम को दिखाती हैं | हम जैसे लोग जो अहं में रावण बन रहे हैं, उनको शिक्षा देने के लिए महाप्रभुजी ने ऐसी प्रगाढ़ भक्त-प्रेममय लीलाओं का अनुकरण किया |

क्रमशः

सच्चे मन से कोई भगवान् की शरण पकड़ ले
तो काल को जीत लेगा -
"जो घट अन्तर हरि सुमिरै ।
ताकौ काल रूठि का करिहै, जो चित चरन धरै ॥"

जब भक्तों से प्यार नहीं है तो भगवान् तुमको सौ जन्म में भी नहीं मिलेंगे ।

ब्रज के महान रसिक संत श्री हरिराम व्यास जी ने कहा है कि हम लोग संसारियों का तो बड़ा आदर करते हैं, समधी आया, ससुर आया, इन्हें आदर से बिठाते हैं और भक्तों का आदर नहीं करते |

श्रीकृष्ण-गुणगान से 'भव-दावाग्नि' शांत

श्रीबाबा महाराज द्वारा कथित 'शिक्षाष्टक' (२४/१/२००६) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका बालव्यासाचार्या साध्वी गौरीजी, मानमन्दिर, बरसाना

भव-दावाग्नि क्या है ? वस्तुतः यह त्रितापों व षड्विकारों की अग्नि है | जंगल में आग कैसे लगती है ? कोई दियासलाई लेकर वहाँ आग जलाने नहीं जाता | जंगल में आग तब लगती है जब बाँस के वृक्ष एक-दूसरे से रगड़ा खाते हैं | बाँस के पेड़ों के परस्पर संघर्ष (रगड़) से आग पैदा होती है | बाँस में जब आग लगती है तो वह बाण की तरह फट-फटकर दूर जाता है | जैसे – गाँवों में किसी के छप्पर में आग लगती है तो सारा गाँव डर जाता है क्योंकि बाँस फटकर उसके टुकड़े बाण की तरह दूर-दूर तक जाते हैं और वे आग को सब ओर फैला देते हैं | इसी तरह इस संसार में हम लोगों के अन्तःकरण में वासनाओं की रगड़ से आग पैदा हुई, वह आग दूर तक कैसे फ़ैली ? इसे उदाहरण के द्वारा समझें जैसे हमने आपके पास देखा ५०० रूपये का नोट और झट चोरी कर बैठे या किसी कामिनी का रूप हमने देखा तो पचासों तिकड़म करके चल दिए उसको फँसाने | वहाँ भी आग दूसरे तक पहुँच गयी फिर उससे और तीसरे तक पहुँच गयी, इस तरह से वासनाओं की रगड़ से बड़ी तेजी से आग बढ़ती है, जो 'कथा-कीर्तन, सेवाराधन रूपी जल-वर्षा' से ही बुझती है | जैसे - जंगल में वृक्षों की रगड़ से आग पैदा होती है, वैसे ही वासनाओं की रगड़ से मन के भीतर आग पैदा होती है, इसे महादावाग्नि कहा जाता है | यह आज नहीं पैदा हुई बल्कि अनादिकाल से हमारे अन्तःकरण में जल रही है, इसके कारण हम लोग जल रहे हैं | परस्पर वासनाओं के संघर्ष से यह दावाग्नि पैदा होती है | हमारी वासनाएँ संघर्ष करती हैं, आपस में टकराती हैं, जिससे आग पैदा होती है, जैसे - कामाग्नि पैदा हुई तो वासना ने पहले स्त्री-चिंतन किया फिर उस चिंतन से जो विषय-वस्तु है उसके और चिंतन में संघर्ष हुआ, बार-बार चिंतन में धन अथवा स्त्री आयी तो उस रगड़ से कामाग्नि पैदा होती है, इसीलिए यह महादावाग्नि है | अतः पहली बात तो वासनाओं के संघर्ष से अग्नि पैदा होती है, दूसरी बात कि जब जंगल में आग लगती है तो उसमें पेड़ कुछ नहीं कर सकता, केवल खड़े-खड़े जलता रहेगा, वैसे ही हमलोग भी भवदावाग्नि से जलते रहेंगे, अपना बचाव नहीं कर सकते हैं | जंगल में आग लग गयी तो पेड़ अपना बचाव नहीं कर सकता है, वह केवल तेजी से जलता ही रहेगा, वैसे ही मनुष्य भी कामाग्नि, क्रोधाग्नि, रागाग्नि, द्वेषाग्नि में जलता रहता है, सदा से जलता आया है और जलता रहेगा, वह अपना बचाव नहीं कर सकता | जैसे जंगल में जब भारी वर्षा होवे, घने बादल आ जाएँ तो भले ही दावानल बुझ सकता है | इसी प्रकार भवदावाग्नि को बुझाने के लिए कृष्ण गुणगान वर्षा ऋतु है | तुलसीदासजी ने लिखा है –

बरसा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास |
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ||

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड – १९)

जीव स्वयं अपने विकारों या वासनाओं की आग को नहीं बुझा सकता, जैसे - जंगल में एक भी पेड़ दावानल की आग को नहीं बुझा सकता, केवल जब वर्षा होती है तब उसकी आग बुझती है | उसी प्रकार कामानल-क्रोधानल और विषयानल से जलते हुए मनुष्य की आग बुझाने के लिए भी वर्षा की आवश्यकता होती है | वह वर्षा कहाँ होती है, जहाँ संत रहते हैं वहाँ कृष्ण गुणगान की वर्षा होती है, वहाँ कामानल-क्रोधानल की भट्टी में जलता हुआ

सच्चा भक्त सांसारिक सुख नहीं चाहता है।

मनुष्य पहुँच जाये तो उसकी आग बुझ जाती है | ब्रजगोपियों ने कहा –

तवकथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम् |
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ||

(श्रीमद्भागवतजी १०/३१/९)

गोपियाँ कहती हैं – **'तप्तजीवनम्'** - यह संसार एक भट्टी है | भट्टी में आग जलती रहती है | इस संसार रूपी भट्टी में हर प्राणी का जीवन तप रहा है, हर प्राणी जल रहा है, ऐसा कोई नहीं जो जल नहीं रहा हो, देवता हो चाहे कोई भी हो | यह ऐसी प्रच्छन्न आग है, जो हृदय के भीतर सभी को जला रही है | बाहर दिखाई नहीं पड़ता है, बाहर से लगता है कि कोई अरबपति आदमी है, बड़ी मौज में है, हवाई जहाज में उड़ता है लेकिन अन्दर से वह जल रहा है, इसलिए इसको दावाग्नि कहा गया | एक तो यह आग अपनी ही वासनाओं से पैदा होती है, दूसरे से उत्पन्न नहीं होती है, इसे समझना चाहिए | हम यही समझते हैं कि यह आदमी हमसे वैर करता है, हमको गाली दे रहा है, यह अज्ञान है | यह आदमी हमको मार रहा है, ऐसा सोचना अज्ञान है, यह आदमी हमारी हत्या कर रहा है, ऐसा सोचना भी अज्ञान है | श्रीलक्ष्मणजी ने निषादराज से कहा था –**काहु न कोउ सुख दुख कर दाता |**
निज कृत करम भोग सबु भ्राता ||

(श्रीरामचरितमानसजी, अयोध्याकाण्ड – ९२)

इसी बात को श्रीकृष्ण ने नन्दबाबा से कहा था –

कर्मणा जायते जन्तुः कर्मणैव विलीयते |
सुखं दुःखं भयं क्षेमं कर्मणैवाभिपद्यते ||
देहानुच्चावचाञ्जन्तुः प्राप्योत् सृजति कर्मणा |
शत्रुर्मित्रमुदासीनः कर्मैव गुरुरीश्वरः ||

(श्रीमद्भागवतजी १०/२४/१३,१७)

"बाबा ! इंद्र क्या है ? वास्तविक स्वरूप में न कोई मित्र है, न कोई शत्रु है | कर्म ही शत्रु है, कर्म ही मित्र बनता है, कर्म ही गुरु बनता है, कर्म ही ईश्वर है |"

दूसरे को दोषी समझना अज्ञान है | प्रह्लादजी ने अपने पिता हिरण्यकशिपु से कहा –

दस्यून्पुराषण्ण विजित्य लुम्पतो
मन्यन्त एके स्वजिता दिशो दश |
जितात्मनो ज्ञस्य समस्य देहिनां
साधोः स्वमोहप्रभवाः कुतः परे ||

(श्रीमद्भागवतजी ७/८/११)

"हे तात ! शत्रु कौन है ? आप देवताओं को अपना शत्रु समझते हो किन्तु मुख्य शत्रु तो आपके भीतर बैठे हैं, छः डाकू आपके हृदय में बैठकर हर समय आपको लूट रहे हैं और अपने को आप त्रिलोक विजयी समझते हो | जो जितात्मा है, उसके लिए कोई पराया नहीं है, वह जानता है कि हमारा ही कर्म अनेक रूप में आ रहा है |" प्रह्लादजी की इस भक्तिप्रदायी शिक्षा को साधारण व्यक्ति (जिसमें देह-गेह के प्रति असद् अहं भाव है) समझ नहीं सकता | वस्तुतः हमारा ही कर्म शत्रु और मित्र बनकर आता है | **"निज कृत करम भोग सबु भ्राता |"** इस ज्ञान के साथ मनुष्य जब अपने कर्मफल को भोग लेता है तो भक्ति मिल जाती है | भागवत में वर्णन आता है कि दत्तात्रेयजी ने २४ गुरु बनाए थे, उसमें एक पृथ्वी को भी गुरु बनाया और उससे धैर्य की शिक्षा ली, पृथ्वी कभी नहीं कहती कि हमारे ऊपर विष्ठा मत करो, फावड़ा से खोदते क्यों हो? हमारी छाती में भीतर बम क्यों घुसाते हो, (आजकल परमाणु बम का विस्फोट पृथ्वी के भीतर करते हैं) क्रमशः

तुम अपने भीतर ही भगवान् को सोचो (अनन्य स्मरण करो), तब तुम्हारा कोई उद्यम संसार में बेकार नहीं जायेगा, दुःख कभी नहीं आयेगा, आग तुमको जला नहीं पायेगी, पानी डुबा नहीं पायेगा, बीमारियों की हिम्मत क्या है कि कोई भी तुमको छू सके, वे आती हैं तो हवा की तरह चली जाती हैं |

निर्विकार मन का मूल 'नामाराधन-निष्ठा'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'नाम-महिमा' (२२/५/२०१०) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका दीदीजी गुरुकुल की छात्रा बालसाध्वी विरागा जी, मानमन्दिर, बरसाना

अगली चौपाई में गोस्वामीजी कहते हैं कि 'राम नाम' के प्रभाव से ही सतीजी सतियों में सर्वोच्च बन गईं | केवल सतीधर्म से नहीं; श्रीभगवन्नाम के आश्रय से- **हरषे हेतु हेरि हर ही को।**

किय भूषन तिय भूषन ती को॥

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड-१९)

'हेतु हेरि ही को' – (सतीजी के) हृदय के प्रेम को देख करके, 'हरषे हर' - भगवान् शिवजी प्रसन्न हुए और स्त्रियों में भूषण सतीजी को उन्होंने अपने अंग का आभूषण बना लिया | इसके पहले वह (पार्वतीजी) तिय-भूषण (सतियों में श्रेष्ठ) नहीं थीं क्योंकि उनका और लक्ष्मी आदि देवियों का महा सती अनुसूइयाजी से ईर्ष्या का प्रसंग मिलता है; जब उनमें भगवन्नाम-निष्ठा आई तो सब राग-द्वेष दूर हो गया | आगे गोस्वामीजी कहते हैं –

नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड-१९)

भगवन्नाम का प्रभाव शिवजी जानते हैं | कालकूट जहर जिसे अगर महादेवजी न पीते तो सारा संसार जल जाता, भस्म हो जाता, ऐसा तीव्र विष था, अमृत की तरह उस विष ने फल दिया भगवन्नाम के प्रभाव से | भागवत में भी ये प्रसंग आता है | ८ वें स्कंध के ५, ६, ७ तीन अध्यायों में अमृत मंथन की कथा आयी है | छठवें मन्वन्तर में भगवान् का अजित नाम से अवतार हुआ, उस मन्वंतर में देवासुर संग्राम हुआ | देवता-असुर लड़ रहे थे, दैत्य लोग ज्यादा ताकतवर पड़ रहे थे और देवताओं का विनाश कर रहे थे | इन्द्र ऐरावत हाथी के ऊपर चढ़ करके रणभूमि की ओर जा रहे थे | उसी समय दुर्वासाजी वैकुण्ठ से आ रहे थे भगवान् विष्णु की प्रसादी माला पहन के; इन्द्र ने प्रणाम किया, अपने गले की माला उतार के उन्होंने इन्द्र को दिया | इन्द्र ने इसको अपना अपमान समझा, उसने सोचा कि ये अपनी उतारी हुई माला मुझे दे रहे हैं | बड़प्पन जहाँ भी रहता है तो वहाँ सम्मान का फल (सम्मान का भोजन) यही होता है कि जीव फल-त्यागी नहीं होता है, भोगी होता है और ऐसे भोगियों को ज्यादा दंड मिलता है | हम जैसे लोग ज्यादा भोगी हैं क्योंकि दिन-रात सम्मान के लिए लोलुप रहते हैं | इन्द्र ने उस माला को ऐरावत के गले में डाल दिया, वह(ऐरावत) भी देवता है लेकिन 'अपराध' अपराध को पैदा करता है | उसने उस माला को सूँड़ से उठा करके पाँव से कुचल दिया | जैसे एक अंग्रेजी में कहावत है - money begets money अर्थात् 'पैसा' पैसे को पैदा करता है, ऐसे ही sin begets sin अर्थात् एक पाप अनेक पापों को पैदा करता है | अतः जो इन्द्र ने अपराध किया कि हमको दुर्वासा जी अपनी उतीरन माला दे रहे हैं, हमारा तो इसमें सम्मान घट गया; इसके कारण ऐरावत ने उस माला को लेकर के अपने पाँव में डाल कर कुचल दिया, ये देख करके दुर्वासाजी ने इन्द्र को श्रीहीन होने का शाप दे दिया | उन्होंने कहा कि 'संपत्ति या श्री' के कारण तू अन्धा हो गया है | देवराज है तो क्या है, जिसको जरा भी अपनी श्री, संपत्ति, पद आदि का मान (मद) है; वह अन्धा है, चाहे वह साधु हो, विरक्त हो, ज्ञानी हो, पढ़ा-लिखा हो | (ये अवगुण हम लोगों में ज्यादा है |) कुंतीजी ने कहा है –

जन्मैश्वर्यश्रुतश्रीभिरेधमानमदः पुमान्।
नैवार्हत्यभिधातुं वै त्वामकिञ्चनगोचरम्॥ (श्रीमद्भागवतजी १/८/२६)

हे प्रभो ! 'जन्म, ऐश्वर्य, श्रुत, श्री' ये चार चीजें भगवन्नाम के प्रभाव को खत्म कर देती हैं, इन चारों से 'मद' पैदा हो ही जाता है, वह व्यक्ति आपके नाम लेने योग्य नहीं रह जाता है, वह नाम लेगा भी तो नामाभास हो जायेगा, शुद्ध नाम नहीं रह जाता | ये हम जैसे लोगों में ज्यादा होता है, जो पदवी वाले हो गये, व्यास हो गये, महंत हो गये, श्रीमहन्त हो गये, ये बात इस श्लोक में कही है | जन्म के कारण मद होता है - जन्म दो प्रकार का होता है - एक माँ-बाप से, दूसरा दीक्षा लेने पर | दीक्षा लेना पुनर्जन्म माना जाता है तो उससे भी मद पैदा हो जाता है; फिर भाषा बदल जाती है | हम लोग गृहस्थियों को फटकारते हैं - 'तू साधु से ऐसा बोलता है |' ये सब 'मद' की भाषा है | इसलिए पहले 'जन्म' से 'मद' हुआ | दूसरा 'ऐश्वर्य' से मद होता है, 'ऐश्वर्य' माने 'ईशता' अर्थात् शासक बन गया; राजा बन गया तो ईश्वर (स्वामीपन, बड़प्पन, शासक) का भाव ऐश्वर्य आ जाता है | तीसरा मद होता है - 'श्रुत' से अर्थात् वेद, पुराण, शास्त्र, ग्रन्थ आदि को बहुत ज्यादा पढ़ लिया, पढ़ने वाले में जरूर मद मिलेगा विद्वान होने का | चौथा 'श्री' - शोभा (कान्ति) से भी मद बढ़ जाता है | इस प्रकार से भक्तिमार्ग में सावधानी से चलने के लिए ये सब बातें माता कुंतीजी ने कही हैं | मदोन्मत्त जीव को भगवन्नाम का फल क्या मिलेगा, नाम लेने का भी वह अधिकारी नहीं रहता; नाम लेने का अधिकार तो **तृणादपि सुनीचेन** 'स्वयं को तिनके से भी ज्यादा छोटा समझने वाले' को होता है | इसीलिए बड़े-बड़े नामी लोग भाषण भले दे दें, लेकिन कीर्तन करते उनको नहीं देखा गया कि साधारण लोगों में बैठकर के संकीर्तन कर लें | अतः चार चीजों (जन्म, ऐश्वर्य, श्रुत, श्री) में से किसी का भी मद जिसके अन्दर थोड़ा-सा भी है तो वह श्रीभगवान् के विशुद्ध प्रेम से दूर हो जाता है | अब जैसे - मूर्ख के अन्दर विद्या नहीं होती तो वह क्या अहंकार पैदा करेगा परन्तु मन्दबुद्धि के कारण चेतनाशून्य (भगवान् के प्रेम रूपी प्रकाश से रहित अन्तःकरण) होता है | अच्छे कुल में जन्म लेकर हम विरक्त बन गये, ये भाव भी तो अहंकार पैदा करता है | साधुओं ने कहा है – **'चढ़ी भभूत ब्रह्म समाना |'** भभूत लगा लिया तो ब्रह्म बन गये, ये मद है, (अब ब्रह्म क्या कोई चिमटा बजाता है, ब्रह्म कोई चिलम लगाता है |) अब बेचारा जो नीच चांडाल है; उसके पास उत्तम जन्म नहीं है तो वह क्या अहंकार करेगा | भक्तिमार्ग में नीच जन्म वाले को अपनी जाति याद रखनी चाहिए, जिससे कि दीनता पैदा हो | ऊँची जाति वाले को अपनी जाति भूल जाना चाहिए; मुख्य है - दीनता | ऐश्वर्य भाव में ये भी आ गया कि जैसे हम किसी आश्रम के मालिक (श्रीमहन्त, महन्त) हैं तो दैन्य का अभाव होगा | 'श्री' के मद ने तो देवराज इन्द्र तक को नहीं छोड़ा है, प्रसिद्ध प्रसंग है कि जब इन्द्र को दुर्वासाजी ने शाप दिया और तब वे श्रीहीन हो गये, देवता लोग असुरों से हारकर के भाग गये, यज्ञादि बंद हो गये, यज्ञ में देवताओं को भोजन मिलता है, यज्ञ के बंद होने पर सब देवता भूखे मरने लगे | जब श्री चली जाती है तो अनेक प्रकार के कष्ट आते हैं, लौकिक-पारलौकिक सम्मान-समृद्धियाँ, सुख-सम्पत्तियाँ आदि सब नष्ट हो जाती हैं, मन में द्वंद्व (राग-द्वेष आदि संताप) आ जाते हैं | इस बात को भगवान् ने भी कहा है कि पाप (अपराध) का सबसे बड़ा दण्ड यह है कि वह द्वंद्व पैदा कर देता है | वह 'साधन' तप व 'दुःख' वरदान बन जाता है जो अपमान में, बीमारी में मन में किसी तरह का द्वन्द्व पैदा नहीं करता है | गीताजी (७/२८) के अनुसार जब पाप खत्म हो जाता है तो उसकी पहचान यह है कि द्वंद्व चला जाता है –

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् |
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ (श्रीमद्भगवद्गीताजी ७/२८)

ये पाप ही द्वंद्व बनता है, मन में घुन लग जाता है | पाप का सबसे बड़ा दंड है कि विकार (अशांति) पैदा कर देता है, जिससे मनुष्य उदास और चिंताग्रस्त हो जाता है | जब श्रीभगवन्नाम-संकीर्तन से सम्पूर्ण पाप चले जाते हैं तो द्वंद्व धर्म (राग-द्वेष, सुख-दुःख आदि) भी समूलतः (अविद्या की गाँठ 'अहंता' सहित) नष्ट हो जाते हैं | क्रमशः

कृष्ण-प्रेम का प्रवेश द्वार 'काम-त्याग'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'धाम-महिमा' (२९ अक्टूबर २०१८, पड़ाव 'कामवन') से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी अचलप्रेमा जी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीबाबामहाराज ने ब्रजयात्रा के अन्तिम दिन यात्रियों के समक्ष अपने उद्गार में काम विकार से बचने के प्रति सचेत किया | बाबाश्री के शब्दों में - हम यहाँ आप जैसे 'ब्रजप्रेमी' यात्रीजनों का दर्शन करने आये हैं, आप लोग एक यज्ञ पूरा कर रहे हैं | ब्रज-परिक्रमा से बड़ा यज्ञ कुछ नहीं है संसार में, जिसको ब्रह्माजी ने किया, नारदजी ने किया, बड़े-बड़े ऋषियों ने किया, वही यज्ञ आप निष्ठावान लोग पूरा कर रहे हैं, यह साधारण यज्ञ नहीं है, ब्रह्मा-शंकर भी पवित्र होते हैं जिन ब्रजवासियों की चरण रज से, उनकी आराधना करके आप लोग आये हैं, इसलिए हम आप लोगों का दर्शन करने आये हैं | हमारे अस्वस्थ्य होने पर मुरलीजी ने 'ब्रजलीलास्थलियों की महिमा का सरस सत्संग' अपनी सुमधुर वाणी व लेखन ('दिव्यग्रन्थ रसीली ब्रजयात्रा - भाग १,२' ऐसा ग्रन्थ कभी प्रकाशित नहीं हुआ) के द्वारा ब्रजयात्रियों की अति सराहनीय सेवा की है, इससे सारा ब्रज इनको याद करता रहेगा | मुरलिकाजी के बाद इनकी अनुजा (छोटी बहिन) श्रीजी ने यात्रा की सेवा का भार बड़ी अच्छी तरह से सँभाला | 'श्रीजी,' जैसा इनका नाम है, वैसा ही सेवा-कार्य भी करके दिखाया; इन दोनों बहिनों ने यात्रा की ऐसी सेवा की है कि इनको भक्तजन हमेशा याद करेंगे |

अब हम ब्रजयात्रियों से कुछ कहेंगे – देखो भाई यात्रियो ! हमलोगों को जो संदेश दिया महापुरुषों (यथा - ध्रुवजी, प्रह्लादजी, जड़भरतजी आदि) ने वह हमको समझना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए | श्रीप्रह्लादजी महाराज ने यह बात सबसे पहले कही थी –

मतिर्न कृष्णे परतः स्वतो वा मिथोऽभिपद्येत गृहव्रतानाम् |
अदान्तगोभिर्विशतां तमिस्रं पुनः पुनश्चर्वितचर्वणानाम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/५/३०)

हे भक्तजनो ! हे साधको !! तुम्हारी बुद्धि भगवान् कृष्ण में तब तक नहीं लगेगी, जब तक तुम विषयों का त्याग नहीं करोगे, न स्वयं लगेगी, न स्त्री-पुरुष के जोड़े से लगेगी | ऊपर श्लोक में प्रयुक्त शब्द 'गृहव्रत' का अर्थ है कि विवाह तो होता है किन्तु नित्य मैथुन से बचना चाहिए, जो नहीं बचते हैं, उनको गृहव्रती कहा गया है | 'अदान्तगोभिर्विशतां तमिस्रम्'- हमारी इन्द्रियाँ तमिस्र में, विषयों के घोर अन्धकार में घुस रही हैं | 'पुनः पुनश्चर्वितचर्वणानाम्' – बार-बार चबे हुए को चबा रही हैं, थूके हुए को चाट रही हैं, इसलिए प्रह्लादजी ने शिक्षा दिया कि यदि कृष्ण में मन लगाना है तो गृहव्रती मत बनो, विषयों से दूर रहो, अन्धकार की ओर मत जाओ | प्रह्लादजी का यह संदेश श्रीमद्भागवत के सातवें स्कंध में असुर बालकों के प्रति दिए गए उपदेश में उल्लिखित है, यह उपदेश उन्होंने दिया तो असुरों को है लेकिन यह सबके लिए है; यही मत जड़भरतजी का भी है | एक बार राजा रहूगण पालकी पर सवार होकर कपिल भगवान् से शिक्षा लेने के लिए जा रहे थे तो रास्ते में उनको जड़भरतजी मिल गये | राजा रहूगण को पालकी के लिए एक कहार की आवश्यकता थी इसलिए जड़भरत जी को (हृष्ट-पुष्ट होने के कारण) पकड़ लिया गया और शुरू में उनकी महिमा से अनजान होने के कारण उनके प्रति अच्छा व्यवहार नहीं किया गया | रहूगण ने जड़भरत जी को अत्यधिक डाँट-फटकार लगायी परन्तु जड़भरत जी के मन में कोई विकार नहीं आया | रहूगण ने आवेश में

आकर जड़भरतजी से इतना तक कह दिया कि मैं तुझे मृत्युदंड दे दूँगा लेकिन जड़भरत जी को न तो भय हुआ और न ही वह घबराये | सच्चा भक्त इसको कहते हैं

न विक्रिया विश्वसुहृत्सखस्य
साम्येन वीताभिमतेस्तवापि |
महद्विमानात् स्वकृताद्धि मादृङ्
नड्क्ष्यत्यदूरादपि शूलपाणिः ||

(श्रीमद्भागवतजी ५/१०/२५)

जड़भरतजी में अहं नहीं था | 'अहं' से ही क्रोध आता है, असहिष्णुता आती है | राजा रहूगण समझ गया कि जड़भरतजी की बुद्धि सदा साम्य में स्थित रहती है, समान बनी रहती है | ये वीताभिमति हैं, इनमें अहं नहीं है और यदि भगवान् शंकर भी ऐसे महापुरुष का अपराध करेंगे तो वे भी नष्ट हो जायेंगे | ऐसा विचार कर रहूगण जड़भरतजी के चरणों में गिर पड़ा और विशुद्ध सत्संग सुनकर 'भक्ति तत्त्व' को समझा |

भगवान् श्रीकृष्ण ने भी चीरहरण के समय ब्रजगोपियों को सच्चे त्याग व प्रेम की शिक्षा दी है | भगवान् कृष्ण की अद्भुत लीला है | विश्व का सबसे बड़ा शान्ति का पाठ (गीता) उन्होंने कुरुक्षेत्र (युद्ध के मैदान) में दिया, जहाँ हजारों अस्त्र-शस्त्र गरजने के लिए, प्रहार करने के लिए तैयार खड़े हैं | उसी प्रकार सहस्त्रों गोपियाँ जल के भीतर नग्न खड़ी हैं और ऐसी स्थिति में भगवान् संयम की शिक्षा दे रहे हैं –

न मय्यावेशितधियां कामः कामाय कल्पते |
भर्जिता क्वथिता धाना प्रायो बीजाय नेष्यते ||

(श्रीमद्भागवतजी १०/२२/२६)

हे देवियो ! जिसकी बुद्धि मुझमें लग गई है, उसको काम, प्राकृत भाव सता नहीं सकता; जैसे अन्न (धान आदि) को भूंज दो, उबाल दो तो उसमें से अंकुर नहीं निकलेगा, ऐसा ही हमारा भक्त होता है, जिसकी बुद्धि मुझमें लग गयी है, उसको कोई भी वैकारिक काम सता नहीं सकता | इसी तरह भगवान् श्रीकृष्ण के पूर्वज पुरुरवा ने कहा था–

कुतस्तस्यानुभावः स्यात् तेज ईशत्वमेव वा |
योऽन्वगच्छं स्त्रियं यान्ति खरवत् पादताडितः ||

(श्रीमद्भागवतजी ११/२६/११)

मैं उर्वशी के प्रेम में गधा बन गया, जैसे - गधा भोगकाल में गधी की लातों के प्रहार को सहता है, उसी प्रकार भोग की कामना मनुष्य को गधा बना देती है | पुरुष हो अथवा स्त्री जो मैथुनी भोग को नहीं छोड़ता है, उसका तेज, स्वामित्व और प्रभाव घर में, समाज में नहीं रहता है | आजकल घर-घर लड़के 'माँ-बाप' का अपमान करते हैं | माँ-बाप की बात कोई नहीं मानता क्योंकि माँ-बाप में तेज नहीं रहा, क्यों नहीं रहा ? क्योंकि वे गृहव्रती हैं | गृहव्रती (देह-गेहादि में आसक्ति, मैथुनी भाव आदि) नहीं होना चाहिए | वेद भगवान् ने विवाह की जो आज्ञा दी है, उसका अभिप्राय यह नहीं है कि व्रत लेकर मैथुन करें | मरने के समय तक लोगों का शारीरिक संपर्क (इन्द्रिय-सुख के लिए लिपटना-चिपटना) नहीं छूटता है | इसलिए 'श्रीकृष्ण भक्ति' का यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि हम विषय-भोगों में जीवन नष्ट कर दें, जब तक मन में किसी भी प्रकार के सांसारिक भोगों की थोड़ी-सी भी कामना है तब तक कृष्ण से बहुत दूर हैं | भगवान् कृष्ण ने जो उपदेश (श्रीमद्भागवत '१०/२२/२६' में) दिया, उसको सदा याद रखो | इसलिए हमलोगों को भोगासक्ति छोड़कर सच्चाई के साथ 'श्रीकृष्ण-भक्ति' करनी चाहिए, कामी मत बनो | मरते समय तक यदि कामवृत्ति में डूबे रहोगे तो तुम्हारा सारा तेज जल जायेगा | घर में, समाज में कहीं भी तुम्हारा स्वामित्व अथवा प्रभाव नहीं रहेगा | क्रमशः

जैसे-जैसे मनुष्य भजन करता है, वैसे-वैसे उसकी आयु बढ़ती है।

अहैतुकी कृपाकारिणी 'श्रीराधिका'

श्रीबाबा महाराज के 'श्रीराधासुधानिधि-सत्संग' (४/५/१९९८) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी नवीनाश्री जी, मानमन्दिर, बरसाना

श्यामसुन्दर ही प्रेम जानते हैं और कोई नहीं जानता | भगवान् होकर के छोटे-छोटे ग्वालबालों व गोपियों की दासता कर रहा है, ऐसा कौन भगवान् हुआ ? **यद्यपि सकल लोक चूड़ामणि,** अनंत लोकों को बनाने वाला, फिर भी –

दीन अपन को मानें || यमुना पुलिन निकुञ्ज भवन में, मान मानिनी ठानें ||
निकट नवीन कोटि कामिनी पुनि, धीरज मनहिं न मानें ||

कोटि-कोटि गोपिकायें हैं लेकिन लाड़लीजी के बिना श्यामसुन्दर के मन में धीरज नहीं है | इसीलिए श्रीराधासुधानिधि ग्रन्थ के मंगलाचरण में तीन बातें हैं, सबसे पहले जो वस्तुनिर्देशात्मक चीज है, वह वस्तु श्रीराधिकारानी हैं, उनका गौरव बताया गया, जिनके वसनांचल की वायु से ही श्रीकृष्ण अपने को धन्य मानने लगे - **यस्याः कदापि वसनांचल .....**(राधासुधानिधि-१) इस श्लोक में वसनांचल की जितनी लीलायें हैं, अलग-अलग आचार्यों ने अनुभव किया है, उनको रखा जा रहा है | जैसे - दानलीला से रखा गया, गह्वरवन लीला से रखा गया और वसनांचल का उदाहरण यमुनातट की लीला से रखा गया | प्रायः लोग गीतगोविन्द को जानते हैं, यह एक ऐसी रचना है, जिसके गीत इतने प्यारे हुए कि श्रीकृष्ण गीतगोविन्द को गाने वाले के पीछे-पीछे सुनने के लिए घूमते हैं | उसी गीतगोविन्द की शैली पर ही संगीत-माधव की रचना हुई, जिसकी प्रबोधानन्दपाद सरस्वती ने रचना की, जिन्होंने वृन्दावनशतक बनाया, तो संगीतमाधव में उन्होंने एक लीला श्रीराधिकारानी के अंचल के प्रसंग में लिखी है – **योगीन्द्रामृगयन्ति यद् पद रजस्तेनापि...** बड़े-बड़े योगीन्द्र जिस पूर्णतम् पुरुषोत्तम ब्रह्म श्रीकृष्ण की चरणों की रज को ढूँढ़ा करते हैं कि कैसे भी उनके चरणों की धूल मिल जाये, उनका मिलना तो बिना भक्ति के असम्भव है | ऐसा जो दुर्लभ, पूर्णतम् ब्रह्म श्रीकृष्ण भी; यहाँ ब्रज (बरसाने) में आकर के गौरांगी श्रीराधिकारानी को ढूँढ़ा करता है | श्रीकृष्ण का नाम है मनमोहन, सबके मन को मोहित कर लेते हैं परन्तु उनके भी चित्त को चुराने वाली जो यहाँ रहती हैं, वे श्रीकृष्ण भी जिन गौर राधिका की मोहिनी से मोहित होकर के यहाँ घूमा करते हैं, ये वही लीलास्थली श्रीगह्वरवन है | श्रीकृष्ण पूर्णानन्दमय रस ब्रह्म हैं; वह भी जिन राधिकारानी की प्रेमानंद की एक बूँद को पाकर के धन्य हो जाते हैं | यहाँ एक ऐसी विचित्र लीला हुई थी कि एकबार श्रीराधारानी श्रीकृष्ण के साथ वन में घूम रही थीं; (ये वनविहार का प्रसंग है, वनविहार से मतलब है - गह्वरवन आदि स्थलियों की विहारलीला | किसी समय सारा ब्रज वन था, ये खेत-क्षेत्र आदि तो पीछे बने हैं | स्वयं श्यामसुन्दर कहते हैं कि –

न नः पुरो जनपदा न ग्रामा न गृहा वयम् |
नित्यं वनौकस्तात वनशैलनिवासिनः ||

(श्रीमद्भागवतजी १०/२४/२४)

गिरिराज जी, ब्रह्माचल ये सब पर्वत हमारे घर हैं; ऐसा माधुर्यरसमय सम्पूर्ण ब्रज वन ही था, लीलाकाल में सैकड़ों वन थे | कालक्रम से पीछे जाकर के गाँव बसे) अस्तु, श्रीराधारानी और श्रीकृष्ण दोनों वन में भ्रमण कर रहे थे, वनविहार करते समय श्रीराधारानी एक कदम्ब के पास पहुँचती हैं, उसकी बड़ी सुन्दर छटा थी | श्यामसुन्दर ने श्रीजी से पूछा – "हे राधे ! आपको यह वृक्ष व इसके फूल प्रिय लग रहे हैं ?" श्रीराधिकरानी ने कहा – "हाँ

श्यामसुन्दर ! यह बहुत सुन्दर वृक्ष है और इसके पुष्प बड़े ही सुगन्धित हैं |" श्यामसुन्दर उस वृक्ष के ऊपर चढ़ने के लिए तैयार हुए, उन्होंने अपना पीताम्बर नीचे बिछाया और पेड़ पर चढ़कर के फूल तोड़ने लग गए, फूल तोड़-तोड़ करके नीचे डाल रहे हैं | वनविहार की ये रसमयी लीला हो रही है | उसी समय सखियाँ वहाँ पहुँचकर के ये सब दृश्य देखती हैं कि बड़ा सुन्दर कदम्ब का वृक्ष है और उस कदम्ब के वृक्ष पर श्रीकृष्ण चढ़कर अपना पीताम्बर नीचे बिछाकर फूल तोड़ रहे हैं | बहुत ऊँचा वृक्ष है इसलिए पीताम्बर पर ही वंशी, लकुट भी एक किनारे रख दी है; सखियाँ ये परम मनोहारी दृश्य देखते ही अति निकट पहुँच गयीं | ग्रन्थकार लिखते हैं – **वितत्य निज उज्ज्वलं .....** श्यामसुन्दर ने कदम्ब के नीचे पीताम्बर बिछा रखा है | सारा वृक्ष कदम्ब के फूलों से लदा हुआ है और फूलों के बीच में श्रीकृष्ण बड़े अच्छे लग रहे हैं | **वंशिकामपि निधाय .....**पीताम्बर पर एक किनारे वंशी रखी हुई है और वह फूल तोड़ रहे हैं | वहाँ से फूल तोड़-तोड़कर के गिरा रहे हैं और बड़े प्रसन्न हो रहे हैं कि आज श्रीलाड़लीजी की सेवा हमें मिली है |

वे राधिकारानी अनंत करुणामयी हैं, हम जैसे साधनहीन पतित अधमों को तो केवल उनकी अहैतुकी, असीम कृपा का ही सहारा है –

लड़ैती भानु की प्यारी रे सुनो अलबेली ब्रज रखवार |
महल के द्वार पै ठाढ़ो रे भिखारी झोली पसार ||
ये अंधा है, ये बहरा है, सभी पातक से पूरा है,
हजारों जन्म का भटका रे नहीं इसका कोई उद्धार |
सभी भगवान देखे हैं, जिन्हें निज भक्ति प्यारी है,

"हे राधे ! ब्रह्मा, विष्णु, महादेव और सभी अवतार (राम आदि) देखे हैं किन्तु बिना भक्ति के कोई नहीं तारता है | बिना भक्ति के जो तारेगा, उसके बारे में आप (श्री राधे) ही बताओ |

बिना भक्ति कोई तारे जो बताओ कौन है सरकार |
शरण तेरी ए बेटी भानु की बरसाने की दातार,
पड़ा रहने दे अपने द्वार पै जाऊँ सदा बलिहार |
मैं माँगू बस यही राधे माँगा ही करूँ सौ बार,
पपीहा बन सदा माँगू चरण की रज मस्तक पै धार ||

श्रीजी की शरण में हम लोग आये हैं | अंधे हैं, रास्ता दिखाई नहीं पड़ता | बहरे हैं, सत्संग सुनाई नहीं पड़ता, फिर भी भिखारी हैं, झोली पसारे आये हैं | हजारों जन्म के हम भटके हैं, हमारा उद्धार करने वाला कोई नहीं है |

शरण तेरी ए बेटी भानु की बरसाने की दातार |

हे राधे ! तू बरसाने की रज में हमे पड़ा रहने दे –

पड़ा रहने दे अपने द्वार पै जाऊँ सदा बलिहार |

यहाँ पड़ा रहने दे अपने द्वार पर, बस; यही हम माँगते हैं | हमलोग बरसाने में आ गये हैं, राधारानी के भिक्षुक हैं, कहीं ऐसा न हो जाए कि बरसाने से चले जायें, आप हमको यहाँ पड़ा रहने दो | अपनी शरण में रहने दो, बस यही अन्तिम इच्छा है |

क्रमशः

प्रह्लाद जी ने अपने पिता से कहा था कि पिताजी ! किसी के बारे में पाप (अभाव) न मैं सोचता हूँ, न कहता हूँ, न करता हूँ । पहले मनुष्य सोचता है, फिर कहता है, फिर करता है । जैसे हम सोच रहे हैं कि यह आदमी क्रोधी है, पहले मन में विचार आया, जब मन में विचार आया तब हमने उसकी बुराई की, निन्दा की और लोगों से कहा कि यह आदमी क्रोधी है, फिर क्रिया की, उससे नहीं बोलेंगे, मुँह फेर लेंगे । पहले मनुष्य मन में पाप लाता है, फिर कहता है, फिर करता है । तीन परिस्थितियाँ होती हैं, प्रह्लाद जी कहते हैं – तीनों क्रिया मैं नहीं करता, अतः दुःख न तो मुझे कभी स्पर्श कर पाया और न कर पायेगा । इस बात की गारण्टी है । सबमें भगवान् हैं । किसी में दोष देखना, भगवान् में दोष देखना है ।

भक्ति की किरण 'कृतज्ञता'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'गोपी-गीत'(३/११/१९९५) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी मीरा जी, मानमन्दिर, बरसाना

जब सतीजी महादेवजी से बोलीं कि आप इन्हें (भृगुजी को) क्यों मारने के लिए दौड़ते हो, ये आपके भाई हैं, भूल (गलती) तो सबसे हो जाती है | तब महादेवजी बोले – "अरे, हमको ये उत्पथगामी कहता है |" जब महादेवजी चले थे उनका आलिंगन करने तो ये (भृगु जी) बोले थे कि अरे तुम कुमार्गगामी हो, श्मशान की राख लगाते हो, मुंडमाला पहनते हो | उस समय क्रोधातुर होकर मारने के लिए दौड़ते हुए शंकरजी के देवी पार्वतीजी ने चरण पकड़े तब उनका क्रोध शान्त हुआ | फिर भृगुजी महाराज वैकुण्ठ गये तो उस समय लक्ष्मीजी विष्णु भगवान् के चरण गोद में ले करके दबा रही थीं और बिना किसी कारण के भृगुजी ने भगवान् की छाती में अपने चरण द्वारा प्रहार किया, भगवान् ने इनके चरण पकड़ लिए और क्रोधातुर होने की जगह इनके चरण दबाने लग गये कि आपके चरणों को कष्ट हुआ होगा क्योंकि हमारी छाती बड़ी कठोर है –

अतीव कोमलौ तात चरणौ ते महामुने।
इत्युक्त्वा विप्रचरणौ मर्दयन् स्वेन पाणिना॥

(श्रीमद्भावतजी १०/८९/१०)

हे महामुने ! आपके चरण बड़े ही कोमल हैं | ऐसा कहकर भगवान् अपने हाथों से इनके चरणों की सेवा करने लग गए | बाद में जब भृगुजी वहाँ से लौटने लगे तब लक्ष्मीजी और इनमें आपस में श्रापा-श्रापी हो गयी | लक्ष्मीजी ने कहा- "ब्राह्मण लोग भिक्षुक हो जायें, दर-दर भीख माँगते फिरें |" भृगुजी ने शाप दिया- "तुम जहाँ रहोगी, उसमें बुद्धि नहीं रहेगी |" इसीलिए आज तक देखा जाता है कि धनी लोग मूर्ख होते हैं | अहंकार, दुर्व्यसन, ऐंठ आदि बहुत से दुर्गुण उनमें आ जाते हैं | विद्वान् लोग दीन-हीन होते हैं, धनहीन होते हैं, अतः यह बात उसी प्राचीन समय से चली आ रही है | अस्तु, पूर्व प्रसंगानुसार जब कूरेशजी राजा बने तो महात्मा लोग कहते हैं कि इनके ऊपर दोनों की कृपा थी | ये विद्वान् थे और इनके राज्य में अपार धन-संपत्ति थी क्योंकि ये बड़े भक्त थे, धार्मिक थे, शीलगुण से संपन्न थे | इनके राज्य में विशेषता यह थी कि सभी जगह भक्ति फैली हुई थी | जब राजा भक्त होता है तब प्रजा भी भक्त होती है | जब राजा ही धर्मनिरपेक्ष (धर्म को त्याग देने वाला) हो जाएगा तो प्रजा भी धर्महीन हो जाएगी | (आजकल धर्मनिरपेक्ष होना गौरव की बात समझा जाता है | पापी बनना गौरव की बात तो नहीं है लेकिन आजकल ऐसा ही समझा जाता है | जितने नेता होते हैं, सब धर्म-निरपेक्षता का नारा लगाते हैं | कोई धर्म-सापेक्षता के बारे में बोले कि धर्म ही प्राण है तो ऐसा कहने से वह वोट से वंचित रह जायेगा और उसको समूह से निकाल दिया जायेगा |) कूरेश स्वामीजी की जो प्रजा थी, वह बहुत ही भक्त थी | राजा स्वयं मंगला आरती तथा शयन आरती करने मन्दिर में जाते थे | जब राजा जायेगा तो प्रजा भी मन्दिर में जायेगी | मंदिर में जब प्रभातकालीन आरती होती थी तो सहस्त्रों (हजारों) मंगलमय वाद्य घंटा-बेला इत्यादि बजते थे, सभी लोग नृत्य करते थे तथा कीर्तन होता था | उस प्रभातकालीन-संध्याकालीन आरती के समय मंगलमय वाद्यों से निकली हुई ध्वनि कई कोस दूर तक जाती थी, यहाँ तक कि वनराजपुर में वरदराज भगवान् हैं, वहाँ लक्ष्मी नारायणजी का मंदिर है, वहाँ भी आवाज जाती थी तो लक्ष्मीजी ने श्रीभगवान् से पूछा कि

"ये मंगलमय ध्वनि कहाँ से आती है ?" भगवान् ने बताया कि "ये राजा कूरेशजी बहुत बड़े भक्त हैं और इनके कारण सारी प्रजा मन्दिर में जाती है | हजारों नर-नारी हैं, सैकड़ों गा रहे हैं, नृत्य कर रहे हैं, ये वहीं की आवाज है |" लक्ष्मीजी ने कहा कि जिसकी प्रशंसा स्वयं आप कर रहे हैं; मैं उनका दर्शन करना चाहती हूँ | (वहाँ मन्दिर में जो लक्ष्मी-नारायण का विग्रह है, वह तो उठ करके जा नहीं सकता | लक्ष्मी माता ने उनके (कूरेश स्वामी) दर्शन करने की स्वयं इच्छा किया) श्रीभगवान् भी भक्त को देखना चाहते हैं | कांचीपुरम् के स्वामी, जो कि रामानुजाचार्य जी के पाँच गुरुओं में एक थे | इनको भगवान् ने आज्ञा दिया कि आप जाओ और कूरेशजी से संदेशा कहो कि जगत् माता लक्ष्मीजी तुमको देखना चाहती हैं, तुम हमारे मंदिर में आओ | स्वामीजी गये और वहाँ जाने के बाद राजा कूरेशजी को आज्ञा सुनाई कि लक्ष्मीजी आपका दर्शन करना चाहती हैं | जगत्-माता की आज्ञा हुई है, अतः आप चलो | (भगवान् के भक्तों की विचित्र रहनी होती है | जगज्जननी लक्ष्मीजी बुला रही हैं और कूरेशजी ने मना कर दिया, भक्त को कौन समझ सकता है ? भक्तों की भावनायें क्या हैं, इसको कोई नास्तिक आदमी नहीं जान सकता है | गोपियाँ कृष्ण को गाली देती थीं, इसको कोई बाहर का (बहिर्मुखी) व्यक्ति नहीं जान सकता है | भीष्म पितामह ने श्रीकृष्ण को युद्धभूमि में बड़े तीक्ष्ण बाण मारे | अब कौन विश्वास करेगा कि ये श्रीकृष्ण से प्रेम करते हैं |) परम विद्वान कूरेशजी ने स्वामी जी से कहा कि जाकर के माता से कहना -

क्वाहं कृतघ्नः पापिष्ठो दुर्मनाः परवञ्चकः |
क्वासौ लक्ष्मीः जगन्माता ब्रह्मरुद्रादि वन्दिता ||

कहाँ तो मैं पापिष्ठ (सबसे बड़ा पापी) हूँ, कृतघ्न हूँ | (जो दूसरे के द्वारा किये हुए उपकार को नहीं मानता, उसे कृतघ्न कहते हैं, जो हर समय प्रभु का स्मरण नहीं करता, वह कृतघ्न है)

"मो सम कौन कुटिल खल कामी | (श्रीसूरदासजी)
जिन तन दियो ताहि बिसरायो, ऐसो नमक हरामी ||"

जिस प्रभु ने हमारा कंचन-सा अति सुन्दर शरीर बनाया, (चौरासी लाख योनियों में मानव जैसा कोई शरीर नहीं है | परम कृपामय श्रीभगवान् ने नर-देह में ही सबसे अच्छी ज्ञानेन्द्रियाँ, बुद्धि-बल व ज्ञानशक्ति प्रदान की है, जिससे यह जीव आकाश में उड़ता है, समुद्र के नीचे चलता है, क्या नहीं कर सकता इस 'नर-तन' से ?) लेकिन जिसने यह शरीर बनाया उस प्रभु को भूल जाने से मनुष्य नमकहरामी व कृतघ्न हो जाता है | सूरदासजी दैन्य भाव में अपने लिए कहते हैं कि मैं तो नमकहरामी हूँ, शरीर बनाने वाले करुणामय प्रभु को याद ही नहीं करता | संत-महापुरुष अपने दैन्यमय पदों से हम जैसे संसारी लोगों (जिनका भोगों में, पैसा में, बाहरी चीजों में ही मन डूबा रहता है) को शिक्षा देते हैं कि हमें भगवान् ने मनुष्य-शरीर किसलिए दिया है ? अरे, विषय-भोग तो कुत्ता-बिल्ली, गधे भी भोगते रहते हैं, मलभोजी सुअर भी कई बच्चे पैदा कर लेता है | इसलिए मोक्ष का द्वार यह मनुष्य शरीर मल-मूत्रमय भोग भोगने के लिए नहीं अपितु सतत् साधन (श्रीकृष्णाराधन) करने के लिए दयामय श्रीभगवान् ने दिया है – (श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड- ४)

एहि तन कर फल बिषय न भाई | स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ||

अकाट्य सत्य बात है कि इस शरीर का फल विषय नहीं है, इस उपदेश को स्वयं श्रीभगवान् कह रहे हैं |

इसलिए कूरेशजी ने कहा –

क्वाहं कृतघ्नः पापिष्ठो दुर्मनाः परवञ्चकः |
क्वासौ लक्ष्मीः जगन्माता ब्रह्मरुद्रादि वन्दिता ||

"कहाँ तो मैं अति कृतघ्न, पापिष्ठ, दुर्मना व परवञ्चक हूँ और कहाँ तो ब्रह्मा, शिव आदि से आराधित जगज्जननी श्रीलक्ष्मीजी |" वस्तुतः भक्तिमय ज्ञान (सच्ची दीनता) आ जाने पर ही हृदय से ऐसी वास्तविक बात निकलती है, जो विशुद्ध भक्ति का स्वरूप है | क्रमशः

सच्ची सेवाराधिका सिलपिल्लेबाई

श्रीबाबामहाराज के एकादशी-सत्संग (३०/६/२०१२) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी गोविंदी जी, मानमन्दिर, बरसाना

भक्तमाल के प्रसंगानुसार दो प्रेमी भक्ता हुई हैं और दोनों का ही नाम सिलपिल्लेबाई था | ये दोनों जब छोटी थीं, उस समय साथ-साथ खेलती थीं | एक तो जमीदार (जागीरदार) की लड़की थी और एक राजा की बेटी थी | एक बार कोई 'संतजी' राजा के यहाँ आकर के रुके, वह संत बड़े अच्छे थे, शालिग्रामजी की सेवा करते थे | ये दोनों बालिकाएँ छोटी-छोटी सी थीं, संत भगवान् के पास जाकर ये दोनों बैठ गयीं और पूछने लगीं- "बाबा ! ये गोल-गोल जैसी क्या चीज है ?" संत भगवान् ने कहा- "ये भगवान् हैं |" उन दोनों लड़कियों ने पूछा कि भगवान् क्या करते हैं ? वह संत भगवान् की लीला सुनाने लग गये कि सारी दुनिया उन्होंने बनाई है, हम सभी लोग उन्हीं सर्वशक्तिमान श्रीभगवान् की संतान हैं | अगर हमलोग उनका भजन नहीं करते हैं तो मरने के बाद अच्छी गति नहीं होती है, यमराज के नरक में जाते हैं | संत भगवान् बताने लग गये कि यमराज कौन हैं, नरक क्या है ? नरक ऐसा स्थान है, जहाँ कष्ट ही कष्ट मिलता है | केवल भगवान् का भजन करने वाला ही इस भयंकर दुःखदायी नरक व यमराज के क्रोध से बचता है | तब उन दोनों बच्चियों ने पूछा कि हमको भी नरक जाना पड़ेगा ? संत भगवान् बोले – "हाँ, जो भजन नहीं करेगा; वह तो नरक में जायेगा ही जायेगा |" वे दोनों बच्चियाँ बोलीं कि फिर आप हमको भी भजन सिखाइये, हम भी भगवान् की सेवा करेंगे | जिद्द करने लग गयीं कि हमको भी शालिग्रामजी लाओ, जैसे तुम नहलाते हो; वैसे हम भी नहलायेंगी, भोग लगायेंगी, सेवा, आरती-पूजा करेंगी | संत भगवान् ने सोचा कि ये जिद्द कर रही हैं तो इनको (शालिग्राम) देना जरूरी है | अतः वह संत भगवान् किसी स्थान से 'दो गोल-गोल पत्थर' उठा लाये और सोचने लग गये कि ये बेचारी बालिकाएँ तो अभी ठाकुर जी की सेवा (नहलाना-धुलाना, सजाना, खिलाना-पिलाना, सुलाना-जगाना इत्यादि) करना जानती नहीं हैं, ये अभी छोटी उम्र की लड़कियाँ हैं, अतः इनको शालिग्राम के रूप में पत्थर दे दें, ये पहचानती तो हैं नहीं; इसलिए गोल-गोल पत्थर ला करके दे दिया और कहा कि तुम लोगों के ये सिलपिल्ले भगवान् हैं | दोनों अबोध बालिकाओं ने एक-एक शालिग्राम-स्वरूप वह गोल पत्थर ले लिया | (भगवान् बच्चों की भक्ति से अति शीघ्र प्रसन्न होते हैं क्योंकि छोटेपन में गंदगियाँ नहीं आती हैं, बच्चों का शुद्ध मन होता है | ज्यों-ज्यों आयु बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों ही अहं भाव बढ़ता जाता है | जैसे - कपड़ा जितना पुराना होता है तो वह उतना ही गंदा होता जाता है |) अस्तु, उन दोनों बाल-आराधिकाओं ने अत्यन्त श्रद्धा के साथ सेवा किया, जिससे उन पर भगवान् की कृपा हुई, उनके अन्दर विश्वास, प्रेम बढ़ा | बिना ठाकुर जी को भोग लगाये वे स्वयं खाती नहीं थीं, ठाकुर जी को स्नान कराए बिना पानी भी नहीं पीती थीं | आगे चलकर के धीरे-धीरे दोनों बड़ी हो गईं, दोनों का विवाह अलग-अलग अच्छी जगह हो गया क्योंकि एक राजा की बेटी थी और एक जमीदार की | राजा की बेटी का किसी राजकुमार से विवाह हुआ | जो जमीदार की लड़की थी; उसका जहाँ विवाह हुआ, वे भी पैसे वाले थे, हजारों बीघा जमीन थी, दो भाई थे लेकिन दोनों में झगड़ा (बैर) था | पैसा जहाँ भी होता है, वहाँ सगा भाई भी दुश्मन हो जाता है | अब दोनों में जानलेवा शत्रुता हो गयी | दोनों भाई लड़ाई करने (मारने-पीटने) के लिए दस-बीस गुंडे अपने-अपने पास सदा रखते थे | जमीदार की भक्ता लड़की का विवाह छोटे भाई के साथ हुआ था, वह भी भक्त था और बड़ा भाई भक्त नहीं था | दोनों में बैर तो था ही, तो बड़े भाई ने छोटे भाई के यहाँ डाका-डलवा दिया | रात को डाकू लोग आये, छोटे भाई की जान तो बच गयी लेकिन सब माल-पानी, सोना, चाँदी, गहना और उसके साथ ही उस नवविवाहिता लड़की के ठाकुरजी भी

डाकुओं के पास चले गये क्योंकि ठाकुरजी के लिए उसने बहुत बढ़िया पेटी बनवाई थी | उन डाकुओं ने समझा कि इसमें गहना है और सब माल-पानी बाँध करके चले गये | सबेरे हल्ला मचा कि जमीदार के यहाँ डाका पड़ गया, डाकुओं ने कुछ नहीं छोड़ा | रात भर ढोते रहे, बर्तन-भाड़े सब ले गये | अब ये लड़की अपने प्राण प्यारे श्रीठाकुरजी (शालिग्रामजी) के विरह में (हमारे सिलपिल्ले भगवान् चले गये) रोने लग गयी क्योंकि इसमें भक्ति आ गयी थी | संतजी ने सिलपिल्ले भगवान् नाम बताया था | जब एक-दो दिन में पता पड़ गया कि डाकू लोग कहाँ से आये थे, बड़े भाई ने ही डाका डलवाया था, उसके पास बड़े-बड़े गुंडे रहते थे, उसके घर में बड़ी बैठक थी, चौपाल थी, सब माल वहीं गया और उसमें ठाकुरजी की पेटी भी चली गयी | अब वह लड़की न कुछ रोटी इत्यादि खाती थी और न ही पानी पीती थी | एक-दो दिन हो गये, वह बिल्कुल निर्जला रही | पति ने समझा ये तो मर जायेगी, तब उसने कहा कि तुम जाओ, हमारे बड़े भाई से ठाकुरजी माँग लाओ, माल-पानी तो माँगोगी नहीं; ठाकुरजी ही माँगोगी, इसलिए ठाकुरजी तेरी रक्षा करेंगे | बड़े भाई का बैर तो हमसे है, तेरे से क्या बैर है ? वह बोली – "ठीक है, मैं जाऊँगी, अपने ठाकुरजी अवश्य लाऊँगी और जब तक ठाकुरजी नहीं आयेंगे, तब तक मैं उनको बिना भोग लगाये कैसे खा सकती हूँ ?" सिलपिल्ले के विरह में बिना खाये-पिये दो-तीन दिन में उसके होंठ सूख गये थे, मुख सूख गया था | शीलगुण सम्पन्न सुकमारी तो थी ही, सबेरे उठी; पास के गाँव में ही बड़ा भाई रहता था, सिलपिल्ले भगवान् का नाम ले करके अकेली ही उसके घर चली गयी | (जो भक्ति करता है, वह भगवान् पर विश्वास रखता ही है |) जब बड़े भाई के यहाँ पहुँची, वहाँ दस-बीस गुंडे बैठे थे | उनका काम ही था ताश खेलना, हा-हा...हू-हू ...करते हुए मजाक करना, वे गंदे लोग थे | ये अपने ठाकुरजी के वियोग में संतप्त होती हुई पहुँची; इसको सब लोग पहचानते थे | नाम लेकर के बोले – "अरे, तू आ गयी |" इसको देख करके बड़ा भाई भी बोला कि तू भी आ गयी | उससे तो बैर था नहीं | बैर तो आपस में सम्पत्ति के पीछे भाइयों का था | वह बोली – "हाँ, मैं आ गयी |" बड़े भाई ने पूछा कि कैसे आयी ? उस भक्ता लड़की ने सब बात सही-सही कह दिया कि हमसे लोगों ने बताया कि हमारे यहाँ डाका डालने वाले तुम्हारे ही साथी हैं | वे हमारा सब सामान ले आये, इसका हमें कोई दुःख नहीं है क्योंकि जिसके भाग्य में जो होना है, वही होता है | आपके छोटे भाई के भाग्य में अगर धन होगा तो फिर कहीं न कहीं से आ जायेगा | धन देने वाला तो भगवान् है, मनुष्य कितना भी कमाई कर ले, भगवान् की इच्छा के बिना कुछ नहीं मिलता | तब बड़े भाई ने कहा – "फिर तू कैसे आयी ?" उसने कहा कि मैं अपने ठाकुरजी को लेने के लिए आयी हूँ | हमारे ठाकुरजी की पेटी भी आ गयी है | (उसने अपने ठाकुर जी की पेटी की पहचान बतायी कि वह रंगीन है |) हमें हमारे ठाकुरजी दे दो | हमारे गहने भी आ गये हैं, मैं अपने गहने लेने नहीं आयी हूँ, जब तक हमारे ठाकुरजी नहीं दोगे, तब तक मैं न पानी पी सकती हूँ, न भोजन कर सकती हूँ | बड़े भाई को दया आई, उसने अपने लोगों से कहा – "साथियो, इसका सब गहना आदि आ गया है तो इसको गहना आदि तो चाहिए नहीं, ठाकुरजी इसके ला कर दे दो |" जो बदमाश होते हैं, उनमें भक्ति तो होती नहीं है | वे बोले – "अरे, तेरे में अगर भक्ति है तो हम क्यों दें, तू ही ठाकुरजी को बुला ले | तेरे बुलाने से अगर आ जायेंगे तो तू ले जा और बुलाने से नहीं आये तो तुझको ठाकुरजी भी नहीं मिलेंगे क्योंकि एक भी चीज यहाँ से पकड़ी जायेगी तो हमलोगों को मुकदमा में हाजिर होना पड़ेगा | तेरे भगवान् अगर सच्चे हैं तो यहीं से बुला और यहीं से बुलाने पर वे खुद आ जायेंगे |" उसने कहा – "ठीक है, मैं यहीं से बुलाऊँगी, हमारे सिलपिल्ले भगवान् सच्चे हैं | ठाकुरजी सच्चाई से प्रेम करते हैं, मेरे मन में कोई गहने की या संसार की कोई विषय-वासना नहीं है | मैंने तो अपने भगवान् से निष्काम प्रेम किया है, इसलिए मैं यहीं दरवाजे से खड़े होकर के बुलाती हूँ |" गुंडों ने कहा – "भीतर जायेगी कि नहीं ?" वह बोली – "नहीं, अगर मेरा भगवान्

सच्चा होगा तो यहीं आ जायेगा, जहाँ पर अधर्म है, ऐसे घर में मैं पाँव नहीं दूँगी |" ऐसा कहकर वह बाहर ही खड़ी होकर के रोते हुए बुलाने लगी –

आवो रे ! आवो रे !! आवो-आवो ! हे गोपाल !!

तुम ही जीवन प्राण तुम्ही हो, तुम ही स्वामी नाथ तुम्ही हो |

मेरी विनय सुनो, मेरी विनय सुनो | आवो रे.....

वह बुला रही है और डाकू लोग हँसते हुए कह रहे हैं कि पेटी कहीं बाहर आयेगी | ये भूखी मर जाएगी, तब भी कुछ नहीं होने वाला है –

कैसे तुम बिन हाय रहूँ मैं, कैसे तुम बिन हाय जियूँ मैं |
देखो रे, देखो रे, देखो-देखो, हे गोपाल !!

आवो रे, आवो.....उसकी भक्तिमय सच्ची पुकार थी | लोग तो हँस रहे थे, जो बदमाश डाकू थे, वे सोच रहे थे कि इसके चिल्लाने से क्या होगा, अपने-आप चिल्लाकर के थोड़ी देर में भाग जायेगी | हमे इसको ठाकुरजी नहीं देना है, इससे फिर हमारी बदनामी होगी कि सब सामान यहीं है, अभी तो कोई आयेगा नहीं | बदमाशों या गुंडों के आगे कौन आता है | जब वह बुला रही थी तो अचानक जो किवाड़ बंद थे, धड़ाक से टूट गये | उसमें से लोगों ने देखा कि पेटी अपने-आप चली आ रही है | जो ठाकुरजी की पेटी थी, उड़ती-उड़ती आकर के उसकी गोद में आ गयी | उसने कहा – "देखो भैया ! ये हमारे ठाकुरजी हैं, आ गये हैं, अब मैं इनको ले जा रही हूँ | तुमने कहा था, तुम्हारी आज्ञा हो तो ले जाऊँ, मैं चोरी नहीं कर रही हूँ |" यह एक बड़ा चमत्कार था | इस चमत्कार को देखकर के बड़ा भाई भी इस भक्त लड़की के चरणों में गिर पड़ा और बोला - "हम नहीं समझते थे कि तू इतनी बड़ी भक्त है | तू अपने सब गहने ले जा, तेरे से हमारा क्या बैर है ?" बड़े भाई ने गहने ले जाने को इसलिए कहा क्योंकि ठाकुर जी के साथ ही उसके गहने भी आ गये थे | वह बोली – "भैया ! मैंने तुमसे कहा था कि मैं गहनों की भूखी नहीं हूँ | गहना लेने आयी भी नहीं हूँ | मेरा तो गहना और सारा माल-पानी सिलपिल्ले भगवान् ही हैं | तुम जिस धन को पाप से बटोरते हो, तुमको डर नहीं लग रहा है, थोड़ी देर में ये तुम्हारी संपत्ति नष्ट हो जायेगी और भगवान् तुम्हें दंड देगा | तुम होश में आ जाओ, तुमने देखा नहीं कि तुम्हारी किवाड़े टूट गयीं | इसी तरह से सब धन तुम्हारा चला जायेगा, मैं जा रही हूँ |" ऐसा कहकर के उसने पेटी उठायी और चल पड़ी | बड़े भाई ने उसके पाँव में गिरकर कहा कि तुमने हमारी आँखें खोल दी, अपना सामान तो ले जा | वह बोली – "नहीं, मैं नहीं लूँगी, मैं कैसे ले सकती हूँ | तुम अपने छोटे भाई का सब सामान लूटकर के लाये हो, वह भक्त है | भक्त को कष्ट देने वाले भक्तापराधी की कृपा-दया हमें नहीं चाहिए |" यह सुनकर बड़ा भाई रोने लग गया और बोला कि मैं भाई का लूटा हुआ सामान आदि सब कुछ वापस कर दूँगा | तू यहाँ से खाली हाथ मत जा | तू परम भक्त है; इतने में ही एक और चमत्कार हुआ कि बड़े भाई के घर के किवाड़ टूट गये | वह बुरी तरह घबराकर अपने छोटे भाई की पत्नी से बोला – "मुझे बहुत डर लग रहा है | तूने मुझे शाप दे दिया कि ये सब धन नष्ट हो जायेगा | तू हमको क्षमा कर दे, यहाँ से अपना सब धन ले जाओ |" युवती ने डाकुओं से कहा – "चलो, जो धन तुमने रात भर में लूटा है, वह सब छोटे भाई को वापस करो और मेरे साथ चलकर के उससे क्षमा माँगो कि आज से हमलोग कभी भी अधर्म (चोरी-व्यभिचारी आदि पापकर्म) नहीं करेंगे |" सब डाकुओं ने वैसा ही किया | सम्पूर्ण धन वापस गाड़ियों में भरा गया | पहले के जमाने में बैलगाड़ियाँ थीं | कई गाड़ी सामान ढोया गया था, जिस गाँव में बड़े भाई रहते थे, उस गाँव के निवासियों ने भी हल्ला सुना, देखा कि गाड़ियाँ जा रही हैं; सबको पता पड़ गया कि छोटे भाई की बहू है, ठाकुरजी को लेने आयी है | एक लड़की की भक्ति ने सैकड़ों को सुधार दिया | सब डाकू सुधर गये, सब लोगों ने माफ़ी माँगी | आगे-आगे सिलपिल्ले बाई जा रही हैं; उसके पीछे-पीछे गाड़ियाँ व डाकू लोग जा रहे हैं | जिस गाँव में छोटा भाई रहता था, वहाँ पर सब गाड़ियाँ, डाकू और बड़े भाई सहित सिलपिल्लेबाईजी पहुँची | सबसे पहले

सिलपिल्लेबाईजी अपने पति के पास गयीं | पति बोला – "अरे, तू आ गयी, तेरे ठाकुरजी मिल गये ?" सिलपिल्लेजी बोलीं – "ठाकुरजी भी मिल गये और माल भी सब मिल गया, सबसे बड़ी बात है कि सबका जीवन सुधर गया, यही वे डाकू हैं जो सामने खड़े हैं |" सबसे पहले 'बड़ा भाई' छोटे भाई के चरणों में गिरकर कहने लगा – "भैया ! इस भक्ता बहू ने हमारा जीवन सुधार दिया | हमसे बड़ी भूल हुई, हमने गलत काम किया | इसकी भक्ति ने ये चमत्कार दिखाया, इसने गोपालजी को बुलाया और हमलोग तो नास्तिक थे; हम और हमारे सारे डाकू तो हँसी कर रहे थे कि ये तो थोड़ी देर चिल्लाकर के चली जायेगी, हम ठाकुरजी नहीं देंगे लेकिन ये रोती रही और इसने ठाकुर जी को ऐसी पुकार लगायी कि हमारे घर की लोहे की मजबूत किवाड़ें भी टूट गयीं और ठाकुरजी की पेटी उड़ करके इसकी गोद में आ गयी | इसने ठाकुरजी को उठा लिया और उसके बाद इसने कहा कि अब मैं जा रही हूँ, मैंने कुछ गहना आदि नहीं लिया है, केवल ठाकुरजी को लिया है | स्वयं पूछ लो, हमने इससे कहा कि तू अपने गहने तो ले जा, इसने मना कर दिया कि मैं नहीं लूँगी और मुझसे बोली कि तुमलोग भक्तों को सताते हो, दुष्ट हो, मैं तुम्हारा दिया हुआ कुछ भी नहीं लूँगी; मेरा तो देने वाला गोपाल है, वही जब चाहेगा तब दे देगा, फिर वह दे चाहे न दे, उसकी इच्छा, मेरा गोपाल मुझे जैसे भी रखे, मैं उसी की मर्जी (इच्छा) में प्रसन्न हूँ, मेरा जीवन तो उसी के आश्रय में रहेगा |"

यह संसार माया है, इसको देखकर जो इसे सत्य मानता है, वह पशु है । माँ-बाप सब पशु हैं, बच्चा बड़ा हुआ तो सोचते हैं इसका विवाह हो, यह भोग भोगे, इसको रोटी-पानी मिल जाए, बस इससे आगे कुछ नहीं सोचते । कोई माँ-बाप नहीं सोचता कि हमारा बच्चा संसार रूपी कारागार से मुक्त हो जाए । इसलिए चाहे माँ-बाप हैं, वे पशु हैं –

लोकांश्च लोकानुगतान् पशूंश्च
हित्वा श्रितास्ते चरणातपत्रम् ।
परस्परं त्वद्गुणवादसीधु-
पीयूषनिर्यापितदेहधर्माः ॥ **(भा. ३/२१/१७)**

कर्दम जी बोले – इन पशुओं को छोड़ दो । सारा संसार छोड़ दो । ये सब तुमको संसार में फँसने का मार्ग बताएँगे । ऋषभ भगवान् ने कहा है कि जो संसार में फँसाता है उसे छोड़ दो; माँ को छोड़ दो, बाप को छोड़ दो, गुरु को छोड़ दो, अगर गुरु भी चन्दा-चिठ्ठे में फँसाता है, भवसागर से पार होने की शिक्षा नहीं देता तो उसे भी छोड़ दो –

गुरुर्न स स्यात्स्वजनो न स स्यात्
पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात् ।
दैवं न तत्स्यान्न पतिश्च स स्या-
न्न मोचयेद्यः समुपेतमृत्युम् ॥ **(भा. ५/५/१८)**

वह गुरु, गुरु नहीं है; वह स्वजन, स्वजन नहीं हैं; वह माँ, माँ नहीं है; वह पिता, पिता नहीं है; वह दैव, दैव नहीं है; वह पति, पति नहीं है; जो मृत्यु से छूटने का रास्ता नहीं बताता है । जो भगवान् की शरणागति न बतावे, उसको छोड़ दो; यह भगवान् की आज्ञा है ।

भू-देवी की आधारिका 'गौमाता'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'गौ-महिमा' (५/८/२०१२) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी वत्सला जी, मानमन्दिर, बरसाना

जिस समय जनकजी ने नारकीय जीवों को सुख देने के लिए नरक में रहना चाहा, तब स्वयं धर्मराज ने आकर कहा – "हे विदेहराज ! आप कहते हो कि मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा, लेकिन ये ईश्वर का विधान है, साक्षात् भगवान् की ही आज्ञा है, इसलिए आप यहाँ नहीं रह सकते हो | आपका यहाँ रहने का अधिकार नहीं है, आप कहते हो कि इन जीवों को सुख मिल रहा है, इसलिए मैं यहीं रहूँगा; इस असीम अहैतुकी करुणा से तो आपको और अधिक पुण्य मिला है, जिससे आप बहुत ऊपर उठ गये हो, अतः आप अति शीघ्र यहाँ (नरक) से चलें |" जनकजी को नरक से वापस लौटना पड़ा क्योंकि ईश्वर का ऐसा ही विधान है; श्रीभगवान् ने ही स्वर्ग-नरक बनाये हैं | नरक को स्वर्ग हमलोग नहीं बना सकते, किसी को स्वर्ग जाने का रास्ता बता सकते हैं लेकिन किसी के कर्मों को मिटाने की सामर्थ्य हम जैसे साधारण लोगों में नहीं है | एक और विशेष जानने योग्य महत्त्वपूर्ण प्रसंग है – 'ये पृथ्वी रुकी कैसे है ?' पृथ्वी सात कारणों से रुकी है अन्यथा सारा संसार पापमय है, अगर ये सात कारण न हों तो पृथ्वी नष्ट हो जाएगी | सात कारण हैं –

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः |
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥

(स्कन्दपुराण ४/२/१०)

इस पृथ्वी पर तो दिन-रात पाप हो रहा है, उस पाप के प्रभाव से यह कब की नष्ट हो जाती लेकिन सात कारणों से पृथ्वी रुकी हुई है | पहला कारण है कि जब तक इस संसार में गायें हैं, गौशालाएं हैं, गौ-सेवा है, तब तक पृथ्वी नष्ट नहीं होगी | चाहे एटम बम गिरे, चाहे हाइड्रोजन बम गिरे | गायों से विश्व की रक्षा होती है | इसलिए कहा गया है – **"गावो विश्वस्य मातरः |"** ये गायें विश्व की माँ हैं, जैसे अपने बच्चे की माँ रक्षा करती है, वैसे ही गायें संसार की रक्षा कर रही हैं | गायें, ब्राह्मण, वेद, सती स्त्रियाँ, सत्यवादी, त्यागी और दानशील जन - इन सात कारणों से पृथ्वी टिकी हुई है | जो लोग गौभक्त हैं, उनके पुण्य से पृथ्वी टिकी हुई है | भक्तों की भक्ति से भी पृथ्वी टिकी हुई है, नहीं तो कब की नष्ट हो जाती | सतियों, त्यागियों और दानियों के पुण्य से पृथ्वी टिकी हुई है, नहीं तो पापियों के पापों के कारण तो कभी का संसार नष्ट हो जाता | इसलिए मनुष्य को गौ-सेवा करनी चाहिए, इससे संसार का कल्याण होता है अन्यथा संसार तो विनाश के कगार पर है, हर देश एटम बम बना रहा है | ये बात भागवत में भी सनकादिकों ने पृथु जी से कही है – "राजन ! कोई भगवान् के भक्तों को या ब्राह्मण को क्या दे सकता है ? सारा संसार भिखमंगा है –

स्वमेव ब्राह्मणो भुङ्क्ते स्वं वस्ते स्वं ददाति च |
तस्यैवानुग्रहेणान्नं भुञ्जते क्षत्रियादयः ॥

(श्रीमद्भागवतजी ४/२२/४४)

"ब्रह्म जानाति इति ब्राह्मणः" जो भगवान् को जानता है, वह ब्राह्मण है, वह भक्त है | भक्त या ब्राह्मण अपना खाता है, वह किसी दूसरे का नहीं खाता | लोग दान में ब्राह्मणों को 'आटा, अन्न, आवश्यक वस्तुएँ इत्यादि देते हैं लेकिन वास्तव में वह तो अपना ही खा रहा है, अपना ही कपड़ा पहन रहा है और उसकी कृपा से सारा संसार भोजन कर रहा है, नहीं तो सब भूखे मर जायें | यदि आज संसार में ब्राह्मण नहीं हों, भक्त नहीं हों तो सारा संसार अकाल से

मर जायेगा, किसी को एक बार भी भोजन नहीं मिलेगा | इसलिए जो लोग 'भगवान् की भक्ति (भगवन्नाम-संकीर्तन)' करते हैं, वे समस्त जीवों का मंगल कर रहे हैं | श्रीभागवतजी में श्रीकृष्ण-संकीर्तन की महिमा कही गई है –

तस्मात् सङ्कीर्तनं विष्णोर्जगन्मङ्गलमंहसाम् |
महतामपि कौरव्य विद्धयैकान्तिकनिष्कृतिम् ॥

(श्रीभागवतजी ६/३/३१)

श्रीभगवन्नाम-संकीर्तन करने वाले भक्तजन सारे संसार का कल्याण कर रहे हैं | बड़े-बड़े महापापों (जो संसार को भी नष्ट कर दें) का एकमात्र प्रायश्चित 'भगवन्नाम-कीर्तन' ही है | जो लोग गौ-सेवा रूपी आराधना कर रहे हैं, वे सृष्टि का परम कल्याण कर रहे हैं, इसीलिए संसार रुका हुआ है | श्रीकृष्ण-कृपा से ही 'गौ-सेवा' मिलती है | ये बिना कृपा के नहीं होता है | जो लोग कर रहे हैं ऐसा पुण्य कार्य, वे भगवान् की कृपा से कर रहे हैं –

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन |
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूँ स्वाम् ॥

(कठोपनिषद् १/२/२३)

श्रुतियाँ कहती हैं कि जिसको भगवान् वरण कर लेता है, वही इन दिव्य कार्यों को कर सकता है क्योंकि –

अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् |
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः ॥

(कठोपनिषद् १/२/२०)

भगवान् तो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है और बड़े से भी ज्यादा बड़ा है | वह हमारे हृदय की गुफा में छिपा हुआ है, जीव उसको जान ही नहीं सकता है | वह सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, अणु से भी अणु है | उसको मनुष्य देख नहीं सकता है, कब देखेगा, जब संकल्प रहित हो जायेगा | भगवान् की कृपा से ही मनुष्य उसकी महिमा को जानता है, नहीं तो केवल प्रवचन से, बहुत पढ़ने से और बहुत श्रवण से वह नहीं मिल सकता | गीता में भगवान् ने कहा -

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः |
एवं रूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥

(श्रीगीताजी ११/४८)

अर्जुन ! न वेद पढ़ने से, न तपस्या से, किसी भी तरह से मैं प्राप्त नहीं हो सकता हूँ | वह तो एक ही उपाय है कि भगवान् जिसको वरण कर ले | जो लोग कीर्तन करते हैं, भगवान् की कृपा से करते हैं | जो लोग गौ-सेवा करते हैं, भगवान् की कृपा से करते हैं | जिस समय कृपा हट जाती है, उस समय ऐसी स्थिति होती है कि गायें भूखी मरने लगती हैं | जो गायों का पैसा खा लेते हैं, वे अपने लिए नरक का रास्ता बना लेते हैं | चरती हुई गाय को थोड़ा-सा रोकने मात्र से जनकजी को नरक का दर्शन हुआ था फिर जो लोग गौशाला का पैसा खाते हैं, उनकी क्या गति होगी, ये तो भगवान् ही जाने; वे बड़े ही निकृष्ट प्राणी हैं | जो लोग पवित्र भाव से निष्काम 'गौ-सेवा' कर रहे हैं, उनको निश्चय ही भगवान् की कृपा प्राप्त हो चुकी है और निश्चय ही वे आगे बढ़ते जा रहे हैं | जो लोग गायों के संरक्षण व संवर्द्धन के लिए निष्काम नाम-संकीर्तन कर रहे हैं, निश्चय ही उनको भगवान् की विशेष कृपा संप्राप्त हो चुकी है, निश्चय ही उन्होंने विश्व का परम मंगल किया है और कर रहे हैं |

क्रमशः

त्रुटि-सुधार

पिछली पत्रिका अप्रैल २०१९ के अंक में एक लेख 'गौ-सेवा में निहित समस्त समस्याओं का निदान' के अंतर्गत - संविधान सभा ने गौ-हत्या विरोध संरक्षण अनुसंधान और संवर्द्धन का विषय मौलिक अधिकार में न रखकर राज्य के नीतिनिर्देशक तत्वों में रखा | (पिछली त्रुटि-मौलिक अधिकार में रखकर)

गीता-ज्ञान से आत्मबोध

श्रीबाबामहाराज के 'श्रीमद्भगवद्गीता-सत्संग' (१८,१९/१/ २०१२) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका बाल व्यासाचार्या श्री जी, मानमन्दिर, बरसाना

एक संदेहात्मक प्रश्न मन में आता है कि जब आत्मा मरती नहीं है तो फिर संसार में लोग क्यों कहते हैं कि अमुक व्यक्ति मर गया, अमुक व्यक्ति जीवित हो गया ? देहाध्यासी स्थूल बुद्धि वाले मोहग्रसित लोग ही ऐसा कहते व समझते हैं, लेकिन जिन्हें तत्त्वज्ञान है, वे वास्तविकता को समझते हैं, उन्हें मायिक मोह नहीं होता है |

श्लोक – २२

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

वासांसि जीर्णानि - पुराने कपड़ों को, यथा - जैसे, विहाय - छोड़कर के, नवानि गृह्णाति - नए कपड़े ग्रहण कर लेता है, नरः – मनुष्य, अपराणि – दूसरे, तथा – वैसे ही, जीर्णानि शरीराणि – पुराने शरीरों को, विहाय – छोड़कर, नवानि – नये शरीर को, देही – आत्मा; अन्य शरीरों को ग्रहण कर लेता है |

जैसे - पुरानी बनियान फट गयी तो लोग नयी बनियान खरीदते हैं, वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर ग्रहण कर लेता है, इसका ज्ञान होने से आदमी रोता नहीं है; कोई मर गया तो पुराना शरीर चला गया, अब उसको नया शरीर मिलेगा तो यह ख़ुशी की बात है |

श्लोक – २३

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

न - नहीं, एनम् - इसको, शस्त्राणि – शस्त्र, छिन्दन्ति - छेदते हैं | आत्मा को शस्त्र या हथियार न मार सकते हैं, न काट सकते हैं, न एनम् - न इसको, पावकः - आग, दहति - जलाती है, न एनम् – न इसको, आपः - पानी, क्लेदयन्ति - भिगो सकता है और 'न मारुतः' – न हवा, 'शोषयति' - सुखा सकती है | हवा, पानी और हथियार, इन सबका आत्मा पर प्रभाव नहीं पड़ता है |

श्लोक – २४

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥

यह आत्मा नित्य है और 'सर्वगतः' - सब जगह जाने वाला है, स्थाणु - इसमें परिवर्तन नहीं होता है, अचल - कभी चलता नहीं है, सनातन - सदा रहता है | 'अच्छेद्य' - इसको छेदा नहीं जा सकता (काटा नहीं जा सकता), 'अदाह्य' - इसको जलाया नहीं जा सकता, 'अक्लेद्य' - इसको भिगोया नहीं जा सकता, 'अशोष्य' - इसको सुखाया नहीं जा सकता |

श्लोक – २५

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥

यह शरीर क्या है, व्यक्त है, 'व्यक्त' माने प्रकट हुआ, दिखाई पड़ रहा है कि तुम्हारी ऐसी नाक है, आँख है, कान है, ऐसा मुँह है, ऐसा रंग है; ये सब व्यक्त अर्थात् सामने है, इसको व्यक्त कहते हैं | 'व्यक्त' माने सामने जो दिखाई पड़ रहा है और 'आत्मा' अव्यक्त है, सामने दिखाई नहीं पड़ता; जैसे - शरीर को देखते हो, इस प्रकार से यह आत्मा कभी नहीं दिखाई पड़ेगी क्योंकि यह 'अव्यक्त' अर्थात् स्थूल रूप से अप्रकट है, 'अचिन्त्य' अर्थात् जिसका चिन्तन नहीं हो सकता, जैसे - हम सोचते हैं किसी के बारे में कि वह आदमी ऐसा है, उसकी ऐसी शक्ल है परन्तु आत्मा के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता है, यह इतनी कठिन चीज है, 'अविकार्य' - इसमें कोई विकार नहीं है | 'अविकार्योऽयमुच्यते' – इस आत्मा को विकाररहित कहा गया है | 'तस्मादेवं विदित्वैनम्' - इसलिए इस तरह से इसको जानने के बाद, 'नानुशोचितुमर्हसि' - तुम शोक नहीं कर सकते हो | क्योंकि आत्मा कभी प्रकट (स्थूल-दृश्यमान) नहीं होगा, आत्मा कभी विचारों में नहीं आ सकता और उसमें कोई विकार उत्पन्न नहीं हो सकता है

तो शोक क्यों किया जाय ? कोई भी आत्मा है, मौत उसके अन्दर विकार नहीं पैदा कर सकती है और न कोई उसके बारे में सोच सकता है, इसलिए उसके बारे में शोक नहीं करना चाहिए | ये सब सिद्धान्त भले ही पूरी तरह समझ में नहीं आयें लेकिन यदि थोड़ा बहुत भी इसका भाव समझ में आ गया तो वह तुमको भवसागर से पार कर देगा | केवल इतना ही याद रहे कि आत्मा मरता नहीं है, आत्मा जन्म नहीं लेता है तो इतने से ही तुम मौत को जीत लोगे | इसीलिए भारत में अंतिम समय में मरते आदमी को गीता सुनाई जाती है ताकि वह सोच ले कि आत्मा मरती नहीं है, आत्मा जन्म नहीं लेती है, इस विश्वास के साथ शरीर छोड़े | यह विश्वास, यह विचार उसको मौत से जिता देगा | अगर यह बात तुमको याद रहे तो तुम मरोगे नहीं, काल तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगा | इसीलिए तो भगवान् ने गीता-ज्ञान दिया कि इसके सामने मृत्यु कोई चीज नहीं है | ये विचार याद रखें कि अर्जुन भगवान् को सबसे प्रिय था | भगवान् ने अर्जुन से स्वयं कहा कि तू मेरा सबसे अधिक प्यारा है इसलिए मैं तुझे यह ज्ञान दे रहा हूँ | दुनिया में सबसे बड़ा प्यार है – आत्मा का ज्ञान हो जाना|

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ।
ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्॥

(श्रीमद्भगवद्गीताजी ४/१)

भगवान् अर्जुन से कह रहे हैं कि यह ज्ञान तो लुप्त हो गया था | मैंने सबसे पहले सूर्य को यह ज्ञान दिया था, मेरा सर्वप्रथम शिष्य सूर्य है | सूर्य में इतनी चमक, इतना तेज क्यों है, भगवान् द्वारा उन्हें प्रदान किये गये गीता ज्ञान के कारण सूर्य में इतना अधिक प्रकाश है |

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव॥

(श्रीमद्भगवद्गीताजी ४/१)

भगवान् कहते हैं कि सूर्य को मैंने ये योग सिखाया, सूर्य ने अपने पुत्र मनु को और मनु ने अपने पुत्र इक्ष्वाकु को यह ज्ञान दिया | गीता ज्ञान देना ही एक पिता का अपने पुत्र के प्रति सबसे बड़ा प्यार है | पूर्व में जितने बड़े-बड़े राजर्षि हुए हैं, वे इस प्रकार परम्परा से प्राप्त ज्ञान को जानते थे किन्तु आगे चलकर यह ज्ञान नष्ट हो गया, उस ज्ञान को लोग भूल गए | भगवान् अर्जुन से कहते हैं कि वही यह ज्ञान जो योग था, जो सबसे पुरातन है, वह मैंने तुझे दिया क्योंकि तू मेरा भक्त है, मेरा सखा है इसलिए मैंने तुझे यह उत्तम रहस्य सिखाया अर्थात् मेरा सबसे बड़ा प्यार यही है कि मैं जीव को गीता ज्ञान देता हूँ | पिता का सबसे बड़ा प्यार यही है | सूर्य ने मनु को और मनु ने इक्ष्वाकु को यही गीता ज्ञान दिया, इससे अधिक प्यार और कुछ नहीं हो सकता | इसलिए यदि किसी को तुम गीता याद कराते हो, गीता सिखाते हो तो इससे अधिक प्यार और कुछ नहीं हो सकता है | पैसा- धेला देना तो मूर्खों का काम है | गीता का ज्ञान देना सबसे बड़ा प्यार है | यहाँ तक कि यह इंद्र पद से भी बड़ा है, दुनिया का राज्य भी दे दिया जाय तो भी गीता ज्ञान के आगे यह कुछ नहीं है | अर्जुन ने कहा था कि देवताओं का आधिपत्य, इन्द्र पद पाने के बाद भी मेरे मोह और शोक का नाश नहीं हो सकता है किन्तु गीता से उनके शोक-मोह का नाश हो गया | इसलिए गीता ज्ञान इंद्र पद से भी बड़ी चीज है | तुमको कोई देवता बना दे, इन्द्र बना दे, उससे भी बड़ा है गीता का ज्ञान, चक्रवर्ती सम्राट से भी बड़ा है 'गीता-ज्ञान' |

श्लोक – २६

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि॥२६॥

अथ - अथवा, **एनं** – इसको (आत्मा को) तुम **'नित्यजातं'** – नित्य पैदा होने वाला अथवा **नित्यं वा मन्यसे मृतम्** – नित्य मरने वाला समझते हो, **तथापि** – तो भी **महाबाहो** – हे महाबाहो (लम्बी भुजाओं वाले वीर अर्जुन) **'त्वं नैवं शोचितुमर्हसि'** - तुमको शोक नहीं करना चाहिए क्योंकि जो प्रकृति का नियम है वह बदलेगा नहीं, मरने वाला मरेगा और जीने वाला जिएगा किन्तु शोक करने वाला बिना मतलब परेशान होता है | मरने वाला मर गया, उसके लिए रोते रहो तो फायदा क्या, वह लौटेगा तो है नहीं बल्कि रोने से तुम्हारा अज्ञान और बढ़ जायेगा | तुमने अपना व्यर्थ ही नुक्सान किया, अज्ञान बढ़ाया | यदि तुम आत्मा को नित्य मरने वाला अथवा नित्य जीने वाला मानते हो तो भी तुमको शोक नहीं करना चाहिए |

क्रमशः

परमदर्शनीय ' सच्चिदानन्द-रूप'

व्यासाचार्या श्रीमुरलिकाजी द्वारा कथित 'श्रीमद्भागवत-कथा'(९/१/२०१४)

संकलनकर्त्री एवं लेखिका दीदीजी गुरुकुल की छात्रा बालसाध्वी प्रतीक्षा जी, मानमन्दिर, बरसाना

इस परम धर्म में (भागवत धर्म में) प्रवेश करने के बाद क्या करना होगा ? काम और तृष्णा का त्याग करके भगवद्भक्तों की सेवा करनी होगी | एक मुख्य बात कही कि **"अन्यस्य दोषगुणचिन्तनमाशु मुक्त्वा"** यहाँ आने के बाद (इस भागवत धर्म में प्रवेश करने के बाद) गुण और दोष दर्शन दोनों को ही छोड़ना पड़ेगा | हमलोग तो दोष-दर्शन को ही बुरा मानते हैं और गुण दर्शन को अच्छा मानते हैं लेकिन यहाँ पर श्रीगोकर्णजी कहते हैं कि परमधर्म में गुण का देखना भी छोड़ना पड़ेगा और दोष देखना भी छोड़ना पड़ेगा | यदि गुण देखने ही हैं तो भगवान् में कोई गुण कम नहीं हैं; उनका वात्सल्य, उनका सौशील्य, उनका कारुण्य, उनका आर्जव, अनन्तानंत गुण हैं भगवान् में; यदि गुण देखने ही हैं तो भगवान् के गुण देखे जाएँ | यदि संसार में किसी व्यक्ति विशेष में हमलोग गुण-दर्शन करने लग गये फिर भगवान् तो एक कोने में रह जायेंगे और वह व्यक्ति ही भगवान् बन जायेगा कि भाई, ये तो बड़ा भला आदमी है | ठीक है, भला है लेकिन ऐसा नहीं कि उसकी भलाई के चक्कर में भगवान् एक कोने में रखे रह जाएँ | दोष-दर्शन तो निषिद्ध है ही, गुण-दर्शन का भी परम धर्म (भागवत धर्म) में निषेध किया गया है | किसी के गुण भी मत देखो, गुण देखने की आदत है तो भगवान् के गुण देखे जाएँ, दोष देखने की आदत है तो अपने दोष देखे जाएँ, दूसरे के दोष नहीं | अपने अन्दर जितना दोष-दर्शन किया जा सके, उतना ही चित्त शुद्ध होगा, उतना ही हमलोगों के अन्दर जो दुर्गुण होंगे, वे सब मार्जित होंगे, दूर चले जायेंगे

और हम लोग अवगुण-मुक्त हो जायेंगे | भगवान् से यदि कोई गुण जुड़ जाये, देखो, भगवान् से तो गुण ही नहीं, भगवान् से तो यदि दोष भी जुड़ जाये तो उससे बड़ा कोई गुण नहीं है और संसार में यदि गुण भी जुड़ जायेगा तो उससे बड़ा कोई दोष नहीं है | जितने धर्म हैं, भगवान् से यदि नहीं जुड़े तो वे सब अधर्म हैं | गोसाईंजी ने कहा है –

सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ। जहँ न राम पद पंकज भाऊ॥

(श्रीरामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड- २९१)

भगवान् के चरणों से यदि नहीं जुड़ा तो वह धर्म भी सबसे बड़ा अधर्म बन जायेगा क्योंकि –

जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानू। जहँ नहिं राम पेम परधानू॥

(श्रीरामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड- २९१)

वह योग भी कुयोग हो जायेगा, वह ज्ञान भी अज्ञान बन जायेगा, जिसका भगवच्चरणों से सम्बन्ध नहीं हुआ; जो भगवान् से नहीं जुड़ा, वहाँ धर्म अधर्म हो जायेगा | कितना बड़ा दोष था रामानुज सम्प्रदाय के एक वैष्णव श्रीधनुर्धरदासजी महाराज में | ऐसा रुपासक्ति का दोष था कि लौकिक जगत् में तो देखने को मिलेगा ही नहीं | धनुर्धरदासजी अपने स्त्री के रूप में इतने आसक्त थे, इतने आसक्त थे कि एक बार श्रीरंगम में रङ्गदेवजी की रथयात्रा निकल रही थी | धनुर्धरदासजी सदा अपनी पत्नी के मुख से मुख मिला कर चलते थे | पत्नी के साथ कहीं भी जा रहे हैं तो पत्नी का मुख उनकी ही तरफ होता और संसार की तरफ पीठ फेर के उल्टे चलते थे | ऐसी रूप आसक्ति का दोष था | संसार में कहीं भी रूप में आसक्ति होना दोष

भक्ति करने की शक्ति भगवान् ही देते है, जीव में क्षमता नहीं है कि वह स्वयं भक्ति कर सके ।

शरीर को जब से हमने अपना घर मान लिया है, तब से भगवान् से अलग हैं।

ही तो है | धनुर्धरदासजी अपनी स्त्री में इतने आसक्त हो गये कि जब रङ्गनाथ भगवान् की सवारी जा रही थी तो इन्होंने रङ्गनाथ भगवान् की तरफ तो पीठ कर ली और अपनी पत्नी की ओर अभिमुख हो गये | हाथ में छत्र लिए हुए, पत्नी के ऊपर छत्र-छाया कर रहे हैं और ठाकुर जी की तरफ पीठ किये हुए हैं | रामानुज स्वामी ने देखा तो सोचने लगे – 'अरे ! ये बड़ा विचित्र आदमी है | हजारों, लाखों आदमी भगवान् का दर्शन कर रहे हैं और यह प्रभु की ओर पीठ करके अपनी स्त्री का दर्शन करते-करते चल रहा है |' हाथ और फैला लेता, कहीं से अपनी स्त्री को थोड़ा भी धक्का-मुक्का न लग जाये | रामानुज स्वामी ने अपने एक सेवक को भेजा कि भैया, उसको बुलाकर के लाना | स्वामी जी की आज्ञा से उसको सेवक बुलाकर के लाया | रामानुजाचार्य जी समझ गये कि इसमें दोष तो है लेकिन बड़ा पक्का दोष है | यदि यही दोष भगवान् में जुड़ जायेगा तो यह दोष ही गुण बन जायेगा, धर्म बन जायेगा, भक्ति बन जायेगा | रामानुज स्वामी के पास जब वह व्यक्ति आया तो उनकी ओर देख ही नहीं रहा था, वह तो अपनी पत्नी की ओर देख रहा था | पत्नी की ओर देखते-देखते बोला - "बोलो महाराज, मुझे किसलिए बुलाया है ?" रामानुजाचार्यजी बोले, "भैया एक बार ठाकुर जी को तो देख ले |" वह बोला, "बिल्कुल नहीं देखूँगा |" स्वामी जी ने सोचा कि यह तो बड़ा विचित्र आदमी है | उन्होंने कहा - "भैया, तू इस तरह से पत्नी की ओर मुख करके क्यों खड़ा है ?" वह बोला, "मुझे इससे ज्यादा सुन्दर संसार में कोई दिखता नहीं, इसलिए खड़ा हूँ |" स्वामीजी- "छत्र क्यों ले रखा है ?" धनुर्धरदासजी- "कहीं धूप नहीं लग जाये, कहीं धूप से इसका सौन्दर्य न कुम्हला जाये, इसलिए छत्र सेवा कर रहा हूँ |" स्वामीजी- "तो एक बात बता, अगर तुझे इससे भी अधिक कहीं रूप, सौंदर्य का दर्शन मिल जाये तो क्या इस रूप को छोड़ देगा ?" वह बोला- "बिलकुल छोड़ दूंगा; मेरी तो आसक्ति रूप में है, किसी शरीर में थोड़े ही है |" रामानुज जी तो साक्षात् शेषावतार हैं | वे प्रभु से प्रार्थना करने लगे - "हे प्रभो ! इतने लाखों-करोड़ों वैष्णवों को आपने अनुग्रहीत किया है, इस बेचारे को क्यों छोड़े बैठे हो ? ये वहाँ फँसा है, जहाँ रूप नहीं है | आप कृपा करके इसको एक बार अपने वास्तविक स्वरूप का दर्शन करा दें |" आचार्य जी ने धनुर्धर दास से कहा - "भैया, एक बार ठाकुर जी की तरफ तो देख ले |" वह बोला - "बिलकुल नहीं देखूँगा | इस मूर्ति में, इस विग्रह में क्या है जो इसकी ओर देखूं | अरे ! मेरी स्त्री को देखो कितनी सुन्दर है |" अब तो स्वामी जी की आज्ञा से उसकी स्त्री को ही ठाकुर जी की ओर मुख करके खड़ा कर दिया गया | ठाकुर जी के बिलकुल पास में खड़ा कर दिया गया ताकि स्त्री को देखेगा तो उस बहाने से दृष्टि धोखे से भी प्रभु की ओर चली गयी तो इसका कल्याण हो जायेगा | जब स्वामीजी ने ठाकुर जी से इस रूपासक्त स्त्री भक्त पर कृपा करने की प्रार्थना की तो श्री रंगनाथ भगवान् ने अपने दिव्य रूप की एक झलक उसे दिखाई जो कि करोड़ों-करोड़ों कामदेवों की रूप माधुरी को छीन ले | भगवान् के ऐसे कोटि कंदर्पहारी रूप को देखकर धनुर्धरदास ने अपनी स्त्री को धक्का लगाया, हटाया और रामानुज जी के चरणों में गिरकर बोला - "महाराज ! आज तक मैं इस रूप से वंचित क्यों रहा, मुझे यह रूप आज तक देखने को क्यों नहीं मिला, आज तो मुझे बड़े ही विलक्षण रूप का दर्शन हुआ |" अब वे धनुर्धर स्वामी ऐसे भक्त बन गये कि भगवान् के अतिरिक्त कहीं संसार में उनकी दृष्टि जाती ही नहीं थी | इस कथा से यह शिक्षा मिलती है कि यदि दोष भी भगवान् से जुड़ जाये तो वह गुण बन जायेगा | क्रमशः

बुद्धि को शक्तिशाली बनाना चाहिए, बुद्धि कैसे ताकतवर बनेगी ? एकमात्र सत्संग से !

पद्म पुरस्कार 2019
से उत्तर प्रदेश के
सम्मानित महानुभावों के
अभिनन्दन समारोह
के अवसर पर
श्री राम नाईक
माननीय राज्यपाल, उ०प्र०
द्वारा
श्री रमेश बाबाजी महाराज
को ससम्मान भेंट
29 मार्च, 2019
राजभवन, लखनऊ

गौ-ग्रास योजना (महत्वपूर्ण बिन्दु)

१. भारत को कमजोर करने के लिए अंग्रेजों ने भारत की गाय और शिक्षा पर आक्रमण किया था और वो सफल रहे थे |

२. न केवल श्रीकृष्ण भक्ति, बल्कि देश रक्षा एवं विश्व लाभ हेतु भी बाबाश्रीजी, राधा रानी ब्रज यात्रा के रास्ते में पड़ने वाली सभी गायों-गौशालाओं का सम्मान न केवल स्वयं ही करते रहे हैं, अपितु हजारों ब्रज यात्रियों से भी करवाते रहे |

बाबाश्रीजी की सुन्दर भावपूर्ण गौभक्ति की प्रेरणा से ही हजारों ब्रज यात्री, ब्रज यात्रा मार्ग में पड़ने वाली गौशालाओं में तन मन धन से गौसेवा करते रहे हैं | परिणाम स्वरुप गौहत्या में भी कुछ कमी आई |

३. आज बाबाश्रीजी ने सारे भारतवासियों को, भारत की समस्त गायों व गौशालाओं हेतु गौ-ग्रास की सेवा करने की प्रेरणा दी है, ताकि गौहत्या पूर्णतः बंद हो सके व गौमाता सुख से विराजें |

४. गौ-ग्रास सेवा कैसे करनी है ?..

मात्र १ रूपया प्रतिदिन निकाल कर अपनी किसी भी पास या दूर की विश्वस्त गौशाला में गौ-सेवा हेतु दे दीजिये | रोज-रोज नहीं जा सकते तो एक महीने के मात्र ३० रुपये या साल भर के मात्र ३६५ रूपए एक साथ पास की विश्वसनीय गौशाला में दे आ सकते हैं | अधिक धनादि की क्षमता वाले सेवक सामर्थ्यानुसार गौग्रास सेवा में बढ़-चढ़ कर आगे आयें |

जो धन से सेवा नहीं कर सकते, जैसे निःस्पृह साधू-संत जन, वे नित्य गायों के निमित्त प्रार्थना व एक माला अवश्य करें |

५. बाबाश्रीजी ने पहले स्वयं गौ सेवा करके दिखाई, तब कह रहे हैं व सबको प्रेरणा दे रहे हैं। आज ५५,000 से भी अधिक गोवंश की सेवा श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान द्वारा संचालित श्रीमाताजी गौशाला में प्रेम से चल रही है।

Peon to President, living in a hut or palace, every Indian should participate in the spiritual campaign to Save Cows for the wellfare of world. A minimum of one rupee (more if concerned & capable).

Share with your trusted Goshala

Shri Mata Ji Gaushala

Donation Detail of Gau Grass

Srl. No.	Slip NO.	Date	Name	Village	Amount	Remark	Mobile No.
1	26101	22.03.2019	Amar Singh	Bichhor	365	1 Year	
2	26102	22.03.2019	Ravinder Goyal	Bichhor	365	1 Year	9812443503
3	26103	22.03.2019	Rinku	Bichhor	365	1 Year	9813529129
4	26104	22.03.2019	Surender	Bichhor	500	1 Year	9992401567
5	26105	22.03.2019	Gupt Dan	Bichhor	651	1 Year	
6	26106	22.03.2019	Praveen Kumar	Bichhor	365	1 Year	9813255861
7	26107	22.03.2019	Laxman	Bichhor	365	1 Year	9813573536
8	26108	22.03.2019	Narendra Kumar	Bichhor	365	1 Year	9991375320
9	26109	22.03.2019	Maneesh	Bichhor	30	1 Month	9896226166
10	26110	22.03.2019	Anil Kumar	Bichhor	30	1 Month	9813292857
11	26111	22.03.2019	Pradeep Jain	Bichhor	365	1 Year	9017539455
12	26112	22.03.2019	Rajesh	Bichhor	60	2 Month	9671692895
13	26113	22.03.2019	Ratan Lal Gautam	Bichhor	365	1 Year	9541163122
14	26114		CANCEL				
15	26115	22.03.2019	Mahendra Singh	Bichhor	365	1 Year	9541163122
16	26116	23.03.2019	Deepak Tiwari	Bichhor	400	1 Year	8059595394
17	26117	23.03.2019	Laxman Gautam	Bichhor	365	1 Year	9991204853
18	26118	23.03.2019	Naresh Gautam	Bichhor	365	1 Year	9991732550
19	26119	23.03.2019	Dinesh Gautam	Bichhor	365	1 Year	9991320141
20	26120	23.03.2019	Babu Lal Harish Chandra	Bichhor	365	1 Year	9813727375
21	26121	23.03.2019	Gyan Dudha	Bichhor	365	1 Year	8396862418
22	26122	23.03.2019	Gauri Shankar Sharma	Bichhor	122	4 Months	9992328700
23	26123	23.03.2019	Rama Devi	Bichhor	122	4 Months	9992328700
24	26124	23.03.2019	Jagdeesh Prashad	Bichhor	122	4 Months	8059438282
25	26125	23.03.2019	Prem Datta	Bichhor	500	1 Year	9728554068
26	26126	23.03.2019	Dinesh Gautam	Bichhor	365	1 Year	8053543278
27	26127	23.03.2019	Satish Gautam	Bichhor	365	1 Year	9996667226
28	26128	23.03.2019	Seeta Ram	Bichhor	365	1 Year	7404190147
29	26129	23.03.2019	Babli Sahu	Bichhor	365	1 Year	9050985398
30	26130	23.03.2019	Manju Gautam	Bichhor	365	1 Year	9812632340
31	26131	23.03.2019	Rishi Kumar Gautam	Bichhor	365	1 Year	9050187833
32	26132	23.03.2019	Mahesh Sharma	Bichhor	93	3 Months	9996662635
33	26133	23.03.2019	Khashara Bangat	Bichhor	93	3 Months	9728537509
34	26134	23.03.2019	Mahesh Chandra	Bichhor	30	1 Month	9518022212
35	26135	23.03.2019	Tara Chand Sharma	Bichhor	30	1 Month	9991044990
36	26136	23.03.2019	Prahlad Sharma	Bichhor	30	1 Month	7015217595
37	26137	23.03.2019	Ram Sharan Sharma	Bichhor	30	1 Month	8930181912
38	26138	23.03.2019	Sahdev Sharma	Bichhor	93	3 Months	9991044944
39	26139	23.03.2019	Pursottam Sharma	Bichhor	30	1 Month	9813288408
40	26140	23.03.2019	Prahlad Tejpal	Bichhor	30	1 Month	8053458345
41	26141	23.03.2019	Man Chand Shastri	Bichhor	122	4 Months	9050082600
42	26142	23.03.2019	Brajendra Kumar	Bichhor	30	1 Month	8813025498
43	26143	23.03.2019	Ram Dev Sharma	Bichhor	365	1 Year	9466868564
44	26144	24.03.2019	Charan Singh	Punhana	122	4 Months	9671061418
45	26145	24.03.2019	Vaishnav Misthan Bhandar	Punhana	122	4 Months	9991066964
46	26146	24.03.2019	Om Prakash	Punhana	122	4 Months	
47	26147	24.03.2019	Mukesh Goyal	Punhana	365	1 Year	9813281375
48	26148	24.03.2019	Ramavtar Sahu	Punhana	30	1 Month	9728055738

रंगीली होली पर पूज्य बाबाश्री द्वारा घोषित गौ-ग्रास योजना का व्यापक प्रभाव दिखाई देने लगा है, इस दैवीय कार्य में सबसे पहले ब्रजवासी आगे आ रहे हैं, यूं तो सारे भारत में लोग इस योजना से जुड़ रहे हैं | पत्रिका में सीमित जगह होने के कारण मात्र दो गाँव (बिछोर, पुन्हाना) की सूची हम इस पत्रिका में संलग्न कर रहे हैं, जो सबसे पहले इस योजना से जुड़ने के लिए आगे आये |

49	26149	24.03.2019	Pawan Kumar	Punhana	30	1 Month	9813265755
50	26150	24.03.2019	Ram Sewak	Punhana	93	3 Months	9812298330
			Total		11697		

Shri Mata Ji Gaushala

Donation Detail of Gau Grass

Srl. No.	Slip NO.	Date	Name	Village	Amount	Remark	Mobile No.
1	26301	24.03.2019	Krishna Kanhiya	Punhana	122	4 Months	9050517051
2	26302	24.03.2019	Lallu Ram	Punhana	122	4 Months	9992278410
3	26303	24.03.2019	Naresh Kumar	Punhana	30	1 Month	9050769642
4	26304	24.03.2019	Raju	Punhana	500	1 Year	9812055750
5	26305	24.03.2019	Naresh Kumar	Punhana	500	1 Year	9034546252
6	26306	24.03.2019	Mahendra Kumar	Punhana	500	1 Year	7027027013
7	26307	24.03.2019	Vikas Goyal	Punhana	500	1 Year	9812392867
8	26308	24.03.2019	Mukesh Kumar	Punhana	30	1 Month	8053080631
9	26309	24.03.2019	Pawan Saini	Punhana	365	1 Year	9812165787
10	26310	24.03.2019	Ganpat Jalevi Wale	Punhana	122	4 Months	8930187069
11	26311	24.03.2019	Bhagwat Prashad (Govind Shar	Punhana	365	1 Year	9812180735
12	26312	24.03.2019	Kulbhushan Mangla Niraj Kum	Punhana	365	1 Year	9416245638
13	26313	24.03.2019	Narendra Goyal	Punhana	365	1 Year	9812670210
14	26314	24.03.2019	Gopal	Punhana	30	1 Month	7206222662
15	26315	24.03.2019	Sri Pawan Kumar	Punhana	122	4 Months	9812474097
16	26316	24.03.2019	Man Singh	Punhana	365	1 Year	8930881800
17	26317	24.03.2019	Happy Crocry Shop	Punhana	30	1 Month	9992265772
18	26318	24.03.2019	Vinod Agrawal	Punhana	365	1 Year	9812062290
19	26319	24.03.2019	Subhash Chandra	Punhana	122	4 Months	9068921477
20	26320	24.03.2019	Sani Misthan Bhandar (Prem C	Punhana	153	5 Months.	9992418040
21	26321	24.03.2019	Raju Chauda	Punhana	122	4 Months	9992060320
22	26322	24.03.2019	Deepak Jain	Punhana	30	1 Month	9992128229
23	26323	24.03.2019	Deepak Saini	Punhana	30	1 Month	8059273058
24	26324	24.03.2019	Ami Chand	Punhana	30	1 Month	9254465440
25	26325	24.03.2019	Manish Cloth House	Punhana	30	1 Month	9812678933
26	26326	24.03.2019	Sanjay Singhla	Punhana	122	4 Months	9034733091
27	26327	24.03.2019	Bhagwat Prashad (Praveen Kur	Punhana	30	1 Month	9812925258
28	26328	24.03.2019	Ankur Goyal	Punhana	122	4 Months	9050435601
29	26329	24.03.2019	Narendra Goyal	Punhana	122	4 Months	9812980501
30	26330	24.03.2019	Dr. Yogesh Jain	Punhana	122	4 Months	8059974319
31	26331	24.03.2019	Tile B House (Shop)	Punhana	122	4 Months	9812147112
32	26332	24.03.2019	Pawan Garg Medical Store	Punhana	365	1 Year	9896663065
33	26333	24.03.2019	Pratap Medical Store	Punhana	122	4 Months	9992160375
34	26334	24.03.2019	Deen Dayal Saini	Punhana	122	4 Months	9812115823
35	26335	25.03.2019	Rajendra Prashad	Punhana	365	1 Year	8053871214
36	26336	25.03.2019	Ravindra Kumar	Punhana	183	6 Months	9991247271
37	26337	25.03.2019	Hemraj	Punhana	183	6 Months	9671017292
38	26338	25.03.2019	Raman	Punhana	93	3 Months	9255538638
39	26339	25.03.2019	Jitendar Saini	Punhana	93	3 Months	9034649880
40	26340	25.03.2019	Suneel	Punhana	93	3 Months	9671406461
41	26341	25.03.2019	Prem Chand (Sunil Kumar Sain	Punhana	93	3 Months	8700280581
42	26342	25.03.2019	Jugal Kishor	Punhana	122	4 Months	8950789226
43	26343	25.03.2019	Lekhraj Chawla	Punhana	93	3 Months	9813245151
44	26344	25.03.2019	Pawan	Punhana	30	1 Month	9812726102

45	26345	25.03.2019	Narendra Goyal	Punhana	365	1 Year	9812788543
46	26346	25.03.2019	Gaurav	Punhana	30	1 Month	8607084399
47	26347	25.03.2019	Ramouttam	Punhana	30	1 Month	9812578105
48	26348	25.03.2019	Ashok Saini	Punhana	30	1 Month	8607991714
49	26349	25.03.2019	Rajendra Prashad	Punhana	30	1 Month	9812208844
50	26350	25.03.2019	Vijay Kavi	Punhana	365	1 Year	9812381809
					8762		

Shri Mata Ji Gaushala

Donation Detail of Gau Grass

Srl. No.	Slip NO.	Date	Name	Village	Amount	Remark	Mobile No.
1	26351	25.03.2019	Raju Jain	Punhana	30	1 Month	9992166674
2	26352	25.03.2019	Rajendra Jain	Punhana	365	1 Year	8689018099
3	26353	25.03.2019	Ajay Pustak Bhandar	Punhana	30	1 Month	9034672404
4	26354	25.03.2019	Ramveer Sharma	Punhana	30	1 Month	9813600939
5	26355	25.03.2019	Burji Saini	Punhana	30	1 Month	9728652003
6	26356	25.03.2019	Mahendra Saini	Punhana	365	1 Year	9992036924
7	26357	25.03.2019	Arvind Kumar Garg	Punhana	365	1 Year	9992301404
8	26358	25.03.2019	Love Khandelwal	Punhana	365	1 Year	8239646482
9	26359	25.03.2019	Bhole Sweets	Punhana	93	3 Months	7059460000
10	26360	25.03.2019	Shankar Minsthan Bhandar	Punhana	51	1 Month	9991032624
11	26361	25.03.2019	Sandeep Varma	Punhana	93	3 Months	9812658758
12	26362	25.03.2019	Rajesh	Punhana	93	3 Months	9812761364
13	26363	25.03.2019	Komosen Daya Chand	Punhana	30	1 Month	9034675465
14	26364	25.03.2019	Rahul	Punhana	30	1 Month	9729523160
15	26365	25.03.2019	Daya Ram	Punhana	30	1 Month	9812865954
16	26366	25.03.2019	Bharji Saini	Punhana	30	1 Month	8053813621
17	26367	25.03.2019	Rajesh Kumar	Punhana	30	1 Month	9812265978
18	26368	25.03.2019	Vinod Kumar	Punhana	50	1 Month	9992031908
19	26369	25.03.2019	Naveen Varma	Punhana	60	2 Months	8689039652
20	26370	25.03.2019	Brij Kishor	Punhana	50	1 Month	9813113757
21	26371	25.03.2019	Prahlad	Punhana	30	1 Month	9991407456
22	26372	25.03.2019	Chanchal Rathor	Punhana	183	6 Months	9868713340
23	26373	25.03.2019	Kailash Prajapati	Punhana	30	1 Month	9813227940
24	26374	25.03.2019	Ram Kishan Varma	Punhana	30	1 Month	9812254598
25	26375	25.03.2019	Faritha Gurments	Punhana	31	1 Month	8950388137
26	26376	25.03.2019	Ramjeet	Punhana	183	6 Months	9050728084
27	26377	25.03.2019	Dheeraj Kumar	Punhana	185	6 Months	9729198989
28	26378	25.03.2019	Anil Kumar	Punhana	30	1 Month	9812107059
29	26379	25.03.2019	Maneesh Kumar	Punhana	30	1 Month	9992801346
30	26380	25.03.2019	Shiv Kumar	Punhana	95	3 Months	9034904646
31	26381	25.03.2019	Jagdeesh	Punhana	30	1 Month	8449285207
32	26382	25.03.2019	Govind Ram	Punhana	30	1 Month	9992657348
33	26383	25.03.2019	Mahesh Mittal	Punhana	93	3 Months	9728980911
34	26384	25.03.2019	Rajendra Prashad	Punhana	30	1 Month	9991371754
35	26385	25.03.2019	Puneet	Punhana	30	1 Month	7206898514
36	26386	25.03.2019	Dharamveer	Punhana	60	2 Months	9992801324
37	26387	25.03.2019	Manoj Sahu	Punhana	93	3 Months	9813470213
38	26388	25.03.2019	Dropdi	Punhana	31	1 Month	
39	26389	25.03.2019	Dimple Sharma	Punhana	30	1 Month	9034041711
40	26390	25.03.2019	Amit Kumar	Punhana	93	3 Months	9812392704

41	26391	26.03.2019	Manu Garg	Punhana	101	3 Months	9649771107
42	26392	26.03.2019	Preeti	Punhana	30	1 Month	9728929384
43	26393	26.03.2019	Mukesh Kumar	Punhana	93	3 Months	9416626592
44	26394	26.03.2019	Babu Lal	Punhana	60	2 Months	9671703698
45	26395	26.03.2019	Satveer	Punhana	31	1 Month	9050346425
46	26396	26.03.2019	Indrajeet	Punhana	30	1 Month	9812033798
47	26397	26.03.2019	Lalu Ram	Punhana	30	1 Month	
48	26398	26.03.2019	Lashu	Punhana	30	1 Month	9812319732
49	26399	26.03.2019	Rohit Hemant	Punhana	30	1 Month	9812315438
50	26400	26.03.2019	Satyapal	Punhana	100	3 Months	9812130997
			Total		**4102**		

Shri Mata Ji Gaushala

Donation Detail of Gau Grass

Srl. No.	Slip NO.	Date	Name	Village	Amount	Remark	Mobile No.
1	26201	26.03.2019	Radha	Punhana	30	1 Month	7206137690
2	26202	26.03.2019	Data Ram	Punhana	30	1 Month	9992549436
3	26203	26.03.2019	Ram Dayal	Punhana	30	1 Month	9812066626
4	26204	26.03.2019	Mohan	Punhana	30	1 Month	9992177632
5	26205	26.03.2019	Ved Prakash	Punhana	30	1 Month	8950060500
6	26206	26.03.2019	Pappu	Punhana	60	2 Months	9255352666
7	26207	26.03.2019	Devki	Punhana	183	6 Months	9992898343
8	26208	26.03.2019	Veeru Saini	Punhana	100	3 Months	9812852446
9	26209	26.03.2019	Shikh Chand	Punhana	30	1 Month	9053561533
10	26210	26.03.2019	Paras Ram	Punhana	30	1 Month	9802510686
11	26211	26.03.2019	Yudhisthar	Punhana	365	1 Year	8607891609
12	26212	26.03.2019	Roop Kishor	Punhana	30	1 Month	9671758236
13	26213	26.03.2019	Rohitash	Punhana	365	1 Year	9812827905
14	26214	26.03.2019	Bijendra	Punhana	100	3 Months	
15	26215	26.03.2019	Tara Chand	Punhana	30	1 Month	8813959520
16	26216	26.03.2019	Raman Mahabharat	Punhana	50	1 Month	8685820933
17	26217	26.03.2019	Seeta Ram	Punhana	51	1 Month	9812730347
18	26218	26.03.2019	Bhagat Singh	Punhana	51	1 Month	8607589847
19	26219	26.03.2019	Anil	Punhana	50	1 Month	9992846875
20	26220	26.03.2019	Babu Lal	Punhana	30	1 Month	9812757525
21	26221	26.03.2019	Nayan Chand Saini	Punhana	60	2 Months	8607844718
22	26222	26.03.2019	Nitesh Kumar	Punhana	30	1 Month	9812087565
23	26223	26.03.2019	Arun	Punhana	130	4 Months	8930572897
24	26224	26.03.2019	Ram Kishan	Punhana	200	6 Months	9050178497
25	26225	26.03.2019	Rajendra	Punhana	30	1 Month	9991558721
26	26226	26.03.2019	Rajesh	Punhana	30	1 Month	9813703817
27	26227	26.03.2019	Hansraj	Punhana	30	1 Month	9991471632
28	26228	26.03.2019	Shri Ram	Punhana	30	1 Month	8053039050
					2215		

Shri Mata Ji Gaushala

Donation Detail of Gau Grass

Srl. No.	Slip NO.	Date	Name	Village	Amount	Remark	Mobile No.
1	26251		Cancel				
2	26252	24.03.2019	Khiloni Ram	Punhana	365	1 Year	8059537500
3	26253	24.03.2019	Chirag Garg	Punhana	30	1 Month	9992211550

4	26254	24.03.2019	Anuj Kumar	Punhana	365	1 Year	9996329172
5	26255	24.03.2019	Saurabh Agrawal	Punhana	365	1 Year	9034372602
6	26256	24.03.2019	Raj Kumar	Punhana	365	1 Year	9812189289
7	26257	24.03.2019	Greesh Bansal	Punhana	365	1 Year	9812287746
8	26258	24.03.2019	Pramod Kumar	Punhana	365	1 Year	9255445359
9	26259	24.03.2019	Vikas Kansal	Punhana	365	1 Year	9034963434
10	26260	24.03.2019	Rakesh Kumar Kansal	Punhana	365	1 Year	9812477236
11	26261	24.03.2019	Vidhya Bhushan	Punhana	365	1 Year	9812402081
12	26262	24.03.2019	Tarun Sinha	Punhana	365	1 Year	9992521883
13	26263	24.03.2019	Prakash Pansari	Punhana	122	4 Months	
14	26264	25.03.2019	Dr. Hemanta	Punhana	365	1 Year	7508920931
15	26265	25.03.2019	Ratan Lal Chand	Punhana	30	1 Month	9034255575
16	26266	25.03.2019	Ved Prakash Garg	Punhana	365	1 Year	9812852438
17	26267	25.03.2019	Sanjay Saini	Punhana	365	1 Year	9255495705
18	26268	25.03.2019	Roopa Devi	Punhana	365	1 Year	8930187070
19	26269	25.03.2019	Sachin Saini	Punhana	365	1 Year	8059177197
20	26270	25.03.2019	Gopal Das Naresh Kumar	Punhana	365	1 Year	9812289626
21	26271	25.03.2019	Indra Sen Raj Kumar	Punhana	30	1 Month	9812629540
22	26272	25.03.2019	Rakesh Kumar	Punhana	365	1 Year	
23	26273	25.03.2019	Uttam Singla	Punhana	30	1 Month	8950775092
24	26274	25.03.2019	Madan Kumar	Punhana	30	1 Month	9728017610
25	26275	25.03.2019	Laxman Das	Punhana	365	1 Year	8607041570
26	26276	25.03.2019	Surensdra Prajapati	Punhana	365	1 Year	9728017626
27	26277	25.03.2019	Ashok Kumar	Punhana	365	1 Year	8930371901
28	26278	25.03.2019	Dinesh Garg	Punhana	30	1 Month	9991507981
29	26279	25.03.2019	Dharamveer Agrawal	Punhana	365	1 Year	9728535416
30	26280	25.03.2019	Bhushan Luthara	Punhana	30	1 Month	9813827702
31	26281	25.03.2019	Daya Ram Saini	Punhana	30	1 Month	8814898930
32	26282	25.03.2019	Praveen Kumar	Punhana	365	1 Year	9812903782
33	26283	25.03.2019	Gopal Das	Punhana	30	1 Month	9812407103
34	26284	25.03.2019	Ram Lal Chauhan	Punhana	183	6 Months	9812120211
35	26285	25.03.2019	Paras Pahuja	Punhana	365	1 Year	9991359956
36	26286	25.03.2019	Banti	Punhana	30	1 Month	9992646207
37	26287	25.03.2019	Kapil Kumar	Punhana	93	3 Months	9992116878
38	26288	25.03.2019	Santosh Agrawal	Punhana	30	1 Month	9812996150
39	26289	25.03.2019	Bhupesh Tayal	Punhana	365	1 Year	7206365530
40	26290	25.03.2019	Krishna Ahuja	Punhana	200	6 Months	9813951004
41	26291	25.03.2019	Raju Ahuja	Punhana	365	1 Year	9992126857
42	26292	25.03.2019	Gangan Ji	Punhana	93	3 Months	9992957900
43	26293	25.03.2019	Ajit JI	Punhana	100	3 Months	9812066775
44	26294	26.03.2019	Sarvesh Goyal	Bichhor	365	1 Year	9813789565
45	26295	26.03.2019	Padam Chand	Punhana	30	1 Month	9728320101
46	26296	26.03.2019	Garg	Punhana	30	1 Month	
47	26297	26.03.2019	Suraj Saini	Punhana	365	1 Year	9812106235
48	26298	26.03.2019	Sohan Lal Saini	Punhana	30	1 Month	9306784700
49	26299	26.03.2019	Jai Prakash Mohan	Punhana	30	1 Month	9518279331
50	26300	26.03.2019	Omi Sairi	Punhana	30	1 Month	9992644882
			Total		**11126**		

Scanned with CamScanner

कॉन्वेन्ट स्कूलों का 'भारतीय-संस्कृति' पर कुप्रभाव

स्वदेशी आन्दोलन के प्रणेता- स्वर्गीय श्रीराजीव दीक्षितजी की वाणी से संग्रहीत

संकलन एवं लेखन संत श्री भामिनीशरण जी, मानमन्दिर, बरसाना

ब्रिटेन की संसद में वहाँ के एक प्रमुख शासन अधिकारी विलियम ऐडम ने कहा था कि यदि हमें भारत को गुलाम बनाना है तो जब तक वहाँ की शिक्षा-व्यवस्था को हम नहीं तोड़ेंगे, तब तक भारत गुलाम नहीं बनेगा, तब वहाँ उपस्थित ब्रिटेन के राजा ने विलियम ऐडम से पूछा कि इसके लिए आपके पास क्या योजना है ? इस पर विलियम ने कहा कि मेरे पास एक योजना है | इस योजना के अनुसार हमारी जो सरकार भारत में कार्यरत है, उसको आदेश दिया जाए कि भारत के जो गुरुकुल हैं, indigenous education system (स्वदेशी शिक्षा व्यवस्था) (अंग्रेज उसे कहते थे - भारत का स्थानीय शिक्षा तंत्र), इनको संसद में कानून बनाकर हम अवैध (गैर कानूनी) घोषित कर देंगे कि ये सभी गुरुकुल अवैधानिक, गैर कानूनी हैं, इसके लिए हम लन्दन में कानून बना देंगे और यहाँ से वह कानून भारत में लागू करा देंगे तो थोड़े दिनों में ये सब गुरुकुल बंद हो जायेंगे | हमारे पास जब कानून आ जाएगा तो हम कानून के डंडे से उन गुरुकुलों को बंद करा देंगे कि ये अवैध हैं, इन्हें बंद करो | यदि वे नहीं बंद करेंगे तो हम उन्हें दण्ड देंगे | थोड़े दिनों में दण्ड देते-देते ये गुरुकुल अपने आप बंद हो जायेंगे | इस योजना के अनुसार अंग्रेजों की संसद में एक कानून बना जिसका नाम था 'इंडियन ऐजुकेशन ऐक्ट, वह पारित हुआ, बाद में भारत की संसद में पारित हुआ और उसको लागू किया गया | उसमें तय यह किया गया कि जिन गुरुकुलों में संस्कृत भाषा के माध्यम से विद्या सिखाई जाती है, वह सब गैर कानूनी है | आगे कहा गया कि जिन गुरुकुलों में स्थानीय भाषाओं में जैसे - तेलगू, तमिल, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती आदि के माध्यम से विद्या दी जाती है, वह भी गैरकानूनी है | फिर कानूनी शिक्षा क्या है तो कहा गया कि कानूनी शिक्षा वह है, जहाँ अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा दी जाती है | इसलिए मैकाले ने ब्रिटेन की संसद में भारतीय गुरुकुलों को समाप्त करने के लिए कानून बनवाया, उसे उसने भारत में लागू कराके डंडा चलाया, बुलडोजर चलाया | इस तरह एक-एक करके सभी गुरुकुलों का नाश किया | जो गुरुकुल बंद नहीं हो पाए, उनके अध्यापकों को जेल में डाल दिया, कहीं-कहीं तो अत्याचार इतने हुए कि अध्यापकों के हाथ काट दिए गए, सिर काट दिए गए, कई गुरुकुलों में आग लगा दी गयी, उनके पुस्तकालय जला दिए गए | यह सब अत्याचार अंग्रेजों ने सौ वर्ष तक १८४० से १९४० तक किया | इधर वे अत्याचार करते गए, भारत के गुरुकुल समाप्त होते गए, दूसरी ओर उन्होंने भारत में कॉनवेंट स्कूल शुरू किए, जो यूरोप में आज भी चलते हैं, किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए चलाये जाते हैं | मैं आपको एक विशेष बात और बता दूँ कि जिन अंग्रेजी दस्तावेजों का मैं अध्ययन कर रहा हूँ, उसमें एक दस्तावेज और है, जिसमें बताया गया है कि कान्वेंट क्या है ? यूरोप में एक बहुत बुरी परंपरा है जो अभी १९५० तक चलती रही, जिसके अनुसार स्त्रियों को वोट देने का अधिकार नहीं है | स्त्रियाँ बैंक में खाता नहीं खोल सकतीं, स्त्रियों में आत्मा नहीं होती, ऐसी दोषपूर्ण और दूषित, आसुरी विचारों की परंपरा ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और यूरोप के सभी देशों में चली जिसके अनुसार बच्चों को घर में नहीं रखना है, बच्चे पैदा होते हैं तो उनको अनाथाश्रम में देना | यह यूरोप वालों की पुरानी परम्परा है | वहां के कई लोगों ने तो बच्चा पैदा होने के बाद उन्हें टोकरी में डालकर घर के बाहर रख दिया इस आशय से कि कोई अनाथाश्रम वाला आयेगा और बच्चे को उठाकर ले जायेगा किन्तु कई बार ऐसा हुआ कि नवजात शिशु को कुत्ते उठाकर ले गये, भेड़िये उठा ले गये | क्रमशः